Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

वेराइं कुव्वती वेरी,
ततो वेरेहि रज्जती।

वैरी वैर करता है और फिर वैर में ही अनुरक्त हो जाता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 24 • 20 - 26 मार्च, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-03-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

प्रेक्षा विश्व भारती में जैन दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन

परंपरा से ऊपर परमार्थ होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

मुमुक्षु राहत बनी साध्वीश्री राहतप्रभा

प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा, गांधीनगर, १० मार्च, २०२३

संयम प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा सन् २०२३ की प्रथम जैन भागवती दीक्षा का समारोह और वो भी मूर्तिपूजक श्वेतांबर परिवार से तेरापंथ की दीक्षा का आयोजन। मुमुक्षु राहत ललवानी जो लगभग ढाई वर्ष पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्था में आई थी। परम पावन की असीम अनुकंपा से प्रेक्षा विश्व भारती में उनकी दीक्षा होने जा रही है।

संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमण ने फरमाया कि त्याग का बड़ा महत्त्व है। राग से दुःख उत्पन्न होता है और त्याग से सुख प्राप्त होता है। दुनिया में जितना भी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक दुःख होता है, उसके पीछे राग होता है। राग न हो तो दुःख को पैदा होने का मौका ही नहीं मिलता है।

राग दुखों का मूल है, जो वीतराग बन जाता है, वह दुखों का अंत प्राप्त कर लेता है। राग को जीतने का एक उपाय है–त्याग। दीक्षा त्याग स्वीकार करना है। दीक्षा व्रतों का संग्रह है। भौतिकता के युग में त्याग स्वीकार करना बड़ी बात होती है। छोटी उम्र में संयम ग्रहण करना विशेष बात हो सकती है। महासती गुलाबांजी तेरापंथ धर्मसंघ में सबसे कम उम्र में दीक्षा लेने वाली थी। तेरापंथ का कीर्तिमान है कि वह ८ वर्ष से भी कम उम्र में दीक्षित हो गई थीं।

हमारे धर्मसंघ में १० वर्ष से भी कम उम्र के दीक्षित, शिक्षित और विकसित हुए हैं। मुमुक्षु प्राप्त होना अपने आपमें एक

विशेष बात हो जाती है। तीनों अवस्थाओं में दीक्षा हो सकती है। आज मुमुक्षु राहत की दीक्षा होने जा रही है।

दीक्षा संस्कार से पूर्व आचार्यप्रवर ने पारिवारिकजनों से लिखित व मौखिक आज्ञा की स्वीकृति ली। मूर्तिपूजक परिवार से ये तेरापंथ में दीक्षा हो रही है। परंपरा से ऊपर परमार्थ होता है। 'णमोत्थुणं समणस्स भगवो महावीरस्स' की स्मृति से भगवान महावीर, परम पावन आचार्य भिक्षु एवं उनकी उत्तरवर्ती परंपरा को याद करते हुए पूज्य गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की स्मृति की। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु से सहमति ली।

नमस्कार महामंत्र आर्ष वाणी से दीक्षा संस्कार कराते हुए सामायिक पाठ से मुमुक्षु राहत को यावज्जीवन के लिए तीन करण, तीन योग से सर्व सावद्य प्रवृत्ति का त्याग कराते हुए सामायिक चारित्र ग्रहण करवाया। नवदीक्षित ने पूज्यप्रवर की तीन बार वंदना की।

पूज्यप्रवर ने आर्ष वाणी से अतीत की आलोचना करवाई। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने नवदीक्षित साध्वी का केश लुंचन किया। ज्ञान केंद्र के बाल चोटी के हैं। शिष्य की चोटी गुरु के हाथ में आ जाती है। ज्ञान बढ़े और आचार की विशुद्धता बढ़े। पूज्यप्रवर ने आर्ष वाणी से आशीर्वाद फरमाया और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने नवदीक्षिता को रजोहरण प्रदान करवाया।

पूज्यप्रवर ने नामकरण संस्कार करते हुए मुमुक्षु राहत का नया नाम साध्वी राहतप्रभा रखा। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आहत को राहत देने वाली बनो। इसके साथ ही पूज्यप्रवर ने शिक्षण के रूप में प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। श्रावक समाज ने नवदीक्षित साध्वी को वंदना की। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग सभी को करवाया गया।

हम त्याग-संयम को बढ़ाने का प्रयास करें ताकि आत्मकल्याण हो सके।

दाख और चीनी मधुर होते हैं, पर जहाँ मन लग जाता है, वही मीठा लगने लग जाता है। वर्तमान में आकर्षण के अनेक साधन हैं। पर मुमुक्षु राहत इन आकर्षणों से मुक्त हो दीक्षा ग्रहण करने जा रही हैं। संयम और अध्यात्म के प्रति इसका आकर्षण है। अध्यात्म की संपदा पारस पत्थर से भी अधिक मूल्यवान है। अध्यात्म का प्रवेश द्वार है–दीक्षा। व्रत सुरक्षारूपी छत है। दीक्षा ग्रहण करने वाला मोक्ष की ओर अग्रसर हो जाता है यानि प्रस्थान करता है। तेरापंथ की दीक्षा समर्पण की दीक्षा है।

दीक्षा संस्कार से पूर्व मुमुक्षु रक्षा ने मुमुक्षु राहत का परिचय करवाया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था से धनराज भंसाली ने लिखित आज्ञा पत्र का वाचन किया। पारिवारिकजनों ने आज्ञा पत्र श्रीचरणों में अर्पित किया। मुमुक्षु राहत ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि मदन कुमार जी, मुनि सिद्धार्थकुमार जी, साध्वी सरस्वती जी आदि साध्वियों ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित की।

महाप्रज्ञ विद्या निकेतन के विद्यार्थियों ने गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की। योग के प्रयोग किए। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने प्रेक्षाध्यान शिविर के शिविरार्थियों को उपसंपदा ग्रहण करवाई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तेरापंथ की दीक्षा समर्पण की दीक्षा : साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

दीक्षा संस्कार से पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि दही, शहद, आध्यात्मिक भीतरी आनंद की प्राप्ति हो सके। कल अनेक साधु-साध्वियों से कई बार मिलना हुआ। मुनि मदन कुमार जी, मुनि सिद्धार्थ कुमार जी एवं साध्वी रतनश्री जी की सहवर्ती साध्वियाँ, साध्वी सरस्वती जी, साध्वी मंजुयशा जी, साध्वी अर्हतप्रभा जी, साध्वी कीर्तिलता जी, साध्वी सोमयशा जी एवं साध्वी कार्तिकयशा जी आदि से मिलना हुआ। पूज्यप्रवर ने फरमाया सब साधु-साध्वियाँ खूब आनंद में रहें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 मार्च, 2023

✦ *मिलनसारिता एक सद्गुण है जो सामाजिक जीवन में बहुत उपयोगी है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अनित्य का चिंतन कर अध्यात्म के प्रति जागरूक बनें : आचार्यश्री महाश्रमण

प्रेक्षा विश्व भारती-कोबा, गांधीनगर, ६ मार्च, २०२३

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का अहमदाबाद के उपनगर कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती में मंगल पदार्पण हुआ। हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविका समाज अपने आराध्य के स्वागत में पलक पावड़े बिछाए खड़ा था। जैन-जैनेत्तर सभी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ सड़क के चारों ओर प्रतीक्षारत थे। पूज्यप्रवर जगह-जगह आशीर्वाद की अमृत बरसात कर रहे थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनंतर पट्टधर परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। कोरी नित्यता ही है, ऐसी बात जैन दर्शन को मान्य नहीं है। कोरी अनित्यता ही है, यह भी अर्हत् दर्शन सम्मत नहीं है।

अनेकांतवाद इसी अपेक्षा से नित्यता-अनित्यता यानी नित्यानित्यवाद को मंजूर करता है। एक ही पदार्थ में नित्यता भी है, अनित्यता भी है। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य होता है। पर्याय बदलता रहता है पर पदार्थ में शाश्वतता होती है। धर्मस्तिकाय आदि में जितने प्रदेश हैं वे स्थिर ही रहेंगे कम या ज्यादा नहीं होंगे। परमाणु-पुद्गल दुनिया में जितने हैं, उतने ही रहेंगे। न एक बढ़ता है और न ही एक घटता है।

हर जीव की आत्मा के असंख्य प्रदेशात्मक पिंड हैं। जितने प्रदेश हैं उतने ही प्रदेश असंख्य काल पहले थे और आगे भी रहेंगे। पर्याय बदलती रहती है। मूल अणु पंचास्तिकाय के स्थायी हैं। आत्मा और शरीर अलग-अलग है। आत्मा अछेद्य है। अनित्यता का चिंतन है कि कोई स्थायी नहीं है। अनित्यता के चिंतन से मोह चेतना कमजोर पड़ सकती है। प्रत्येक व्यक्ति को सांसारिक अनित्यता का चिंतन करते हुए धर्म-अध्यात्म के प्रति जागरूक होने का प्रयास करना चाहिए।

आज हम प्रेक्षा विश्व भारती में आए हैं। २००२ चतुर्मास के प्रसंग को समझाया। पूज्यप्रवर ने २०२५ अहमदाबाद का चतुर्मास प्रेक्षा विश्व भारती में करने की घोषणा की। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग पूज्यप्रवर ने करवाया। आत्मा के गुणों का विकास हो। हम आत्म-साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर नए रूप में लंबे अंतराल के बाद प्रेक्षा विश्व भारती में पधारे हैं। श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है। हम परमात्मा पद को प्राप्त कर सकते हैं और उसके दो माध्यम हैं—गुरु सान्निध्य और सत्संगता। गुरु तो अंधकार में प्रकाश करने वाले होते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रवास व्यवस्था समिति से गौतम बाफना, प्रेक्षा विश्व भारती से भैरूलाल चोपड़ा, ध्रुवी गुगलिया, माधुरी बोहरा, धीरज पोकरणा, दीपचंद संचेती, करुणा भंसाली ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्वागत गीत की समूह प्रस्तुति हुई। तेरापंथ पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म दर्शायी गई। तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने सूचनाएँ दी।

पुखराज संकलेचा व गुलाबदेवी के सजोड़े संथारा हुआ था। पारिवारिकजन ने पूज्यप्रवर से संबल प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मकल्याण के लिए नवतत्त्ववाद को जानना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

कोटेश्वर-मोटेरा, अहमदाबाद (गुजरात) १२ मार्च, २०२३

तेरापंथ के ईश्वर आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः कोबा से विहार कर अहमदाबाद के उत्तरी क्षेत्र कोटेश्वर के शाश्वत स्कूल में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि एक आत्ममुखी, एक आत्मा को ही प्रमुख मानकर चलने वाला है।

हमारी दुनिया में अनंत आत्माएँ हैं और शरीर भी हैं। जो हमें निर्जीव पुद्गल दिखाई दे रहे हैं, वे भी कभी किसी जीव के शरीर में रहे होंगे। दुनिया में दो तत्त्व हैं—जीव और अजीव। जीव-आत्मा अमूर्त ही होती है। पर जो अजीव है, वो कई मूर्त और अमूर्त भी होते हैं। पूरे लोकाकाश की अपेक्षा से दो ही तत्त्व हैं—जीव और अजीव।

इनका विस्तार किया जाए तो यह लोक छः द्रव्यों वाला होता है। जैन धर्म में षड् द्रव्यवाद है, तो नव तत्त्ववाद भी है। प्रश्न होता है कि क्या छः द्रव्यों में नवतत्त्व समाविष्ट नहीं हो सकते अथवा क्या नवतत्त्वों में छः द्रव्य समाविष्ट नहीं हो सकते। छः द्रव्यवाद अस्तित्ववाद है। जहाँ लोक के बारे में जानना है, वह छः द्रव्य से जाना जा सकता है। दुनिया छः द्रव्यों वाली है।

गुरुदेव ने आगे फरमाया कि आत्मा का कल्याण करना है, सर्व दुःख मुक्ति प्राप्त करना है एवं मोक्ष प्राप्त करना है तो नवतत्त्ववाद को जानना होगा। नवतत्त्व उपयोगितावाद है, अध्यात्मवाद है। इन नौ तत्त्वों को जान लेना, इन पर श्रद्धा कर लेना यह सम्यक्त्व की बात होती है। सम्यक्त्व प्राप्ति हो जाती है। धार्मिक ज्ञान का मौलिक तत्त्व है—नवतत्त्ववाद। अध्यात्म का सूक्ष्म रूप है।

आत्मा अपने आपमें अकेली है, एक आत्मा की तरफ मुख रखो। जीव अकेला आता है, अकेला जाता है। आत्मा ही कर्मों की कर्ता-भोक्ता है। यह एक प्रसंग से समझाया। सुविधा भोगने में सब साथ हैं, कर्म का फल भोगने में कोई साथ नहीं है। संतों की संगति होने से दुर्जन भी सज्जन बन सकता है। साधु भी बन सकता है। पाप कर्म के बंध से बचें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरुदेव के प्रवचन से लोग अच्छे इंसान, सज्जन व्यक्ति बन रहे हैं। सज्जन व्यक्ति दूसरों का संताप हरता है। हम सब दुःख मुक्त बनें। जब तक व्यक्ति को महान व्यक्ति, गुरु का सान्निध्य नहीं मिलता है, उसका दुःख दूर नहीं होता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में उत्तर अहमदाबाद तेरापंथ सभाध्यक्ष गणपत खतंग, बीजेपी कर्णावती महिला प्रकोष्ठ से अंजली कौशिक, ज्ञानशाला, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

महिलाओं में बौद्धिकता के साथ आध्यात्मिक चेतना और संयम का विकास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

बोरिच, गांधीनगर (गुजरात), ८ मार्च, २०२३

अहिंसा के अग्रदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी का प्रथम बार गुजरात की राजधानी गांधीनगर में पदार्पण हुआ। युगप्रधान परम पावन आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शासन में सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् चारित्र को मोक्ष का मार्ग बताया गया है। उत्तराध्ययन में तप का भी स्वतंत्र नामोल्लेख प्राप्त हुआ है। चतुरंगी मोक्ष मार्ग। मोक्ष मार्ग चार अंगों वाला है। कोरा दर्शन, ज्ञान, चारित्र या तप में से कोई एक है तो मार्ग में परिपूर्णता नहीं आती है। चारों होने से ही परिपूर्णता आती है। इसीलिए मोक्ष मार्ग अध्यात्म जगत का राजमार्ग है।

निर्जरा के लिए तपस्या का महत्त्व है। निर्जरा के सिवाय अन्य कोई भौतिक आशंका के लिए तप मत करो। आत्मा का जो ज्योतिस्वरूप है, उसे तपस्यारूपी अग्नि प्रकट कर देती है। तपस्या के १२ प्रकार बताए गए हैं। जीवन में जितनी संभव हो सके तपस्या भी होनी चाहिए।

गुरुदेव ने फरमाया कि आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। तपस्या में श्राविकाएँ हमेशा आगे रहती हैं। जैन शासन में चार तीर्थ होते हैं। उसमें दो तीर्थ महिलाओं के हैं—साध्वी और श्राविका। श्वेतांबर परंपरा में तो साध्वी का विशेष महत्त्व है। हमारे समाज की महिलाएँ ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी हैं। शिक्षा की दृष्टि से देखें, लौकिक-लौकोत्तर शिक्षा की दृष्टि से तो शिक्षा का विकास है, बौद्धिकता है। वैदुष्य को प्राप्त किया है।

साध्वियाँ-समणियाँ भी कितना कार्य करती हैं। सभी में चेतना का विकास हो। सिद्धों के पंद्रह भेद पूर्वावस्था के आधार पर हैं। मोक्ष में तो अभेद की दुनिया है। निगोद में देखें तो एक शरीर में अनंत जीव होते हैं। ज्ञानशाला में भी महिलाएँ बढ़-चढ़कर सेवा दे रही हैं। माताएँ बच्चों में अच्छे संस्कार प्रदान करें। गुरुदेव ने यह एक प्रसंग से समझाया।

हमारे समाज की महिलाएँ अच्छी तरह से नेतृत्व संभाल लेती हैं। गुरुदेव तुलसी ने नया मोड़ के माध्यम से महिलाओं के विकास के लिए कितना ध्यान दिया था। साध्वियों का भी बहुत विकास किया था। पूरे विश्व की नारी जाति का विकास हो। हम सब एक हैं। महिलाओं में बौद्धिकता के साथ आध्यात्मिक चेतना व संयम का विकास हो। आज विश्व मैत्री तीर्थ में आए हैं। आध्यात्मिकता का विकास होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए आयाम खोल रही हैं, विभिन्न पदों पर काम कर रही हैं और राजनीति में भी आगे बढ़ रही हैं। महिलाएँ आगे बढ़ें पर मूल को सुरक्षित रखें। अपने-अपने परिवार को संभालते हुए आगे बढ़ें। आगे बढ़ने की शक्ति गुरु से मिलती है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महिला मंडल, वर्धमान महिला मंडल, स्थानकवासी समाज से रमेशभाई गांधी, गांधीनगर स्थानकवासी महिला मंडल, विश्वमैत्री धाम से कमलेश भाई, मूर्तिपूजक समाज से हेमेंद्र भाई शाह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

धीरज कोठारी, प्रज्ञा, जय कोठारी, सुनीता बांठिया ने भी भावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि पर

असाधारण गुरुभक्ति

❐ साध्वी सुमतिप्रभा ❐

महाभारत का एक प्रसंग है। आचार्य द्रोण ने कौरव और पांडवों को जब प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया, तब कहा—मैं गुरु के रूप में तुम लोगों से एक वचन माँगता हूँ। मुझसे शस्त्र-शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद तुम लोगों को मेरा एक कार्य करना होगा। क्या तुम लोग अपने गुरु का कार्य पूर्ण करने का वचन दे सकते हो? धर्मराज युधिष्ठिर बड़े संकोच के साथ खड़ा हुआ और बोला—गुरुदेव! वह कार्य क्या है? यद्यपि मुझे इस प्रकार का प्रश्न पूछने का कोई अधिकार नहीं है, किंतु जिज्ञासा किए बिना ही मैं आपको वचन दे दूँ और बाद में उस कार्य को पूरा न कर पाऊँ तो मेरा वचन असत्य हो जाएगा। गुरु को झूठा वचन देना सबसे बड़ा पाप है। आचार्य द्रोण मुस्कुराए और बोले—युधिष्ठिर! तुम्हारी सावधानी श्लाघनीय है, किंतु मैं इस सावधान गुरुभक्ति से तृप्त नहीं हो सकता। पुत्र गुरु के प्रति समर्पण और निष्ठा में इतने नापतौल की आवश्यकता नहीं होती। तभी अर्जुन खड़ा हुआ और बोला—गुरुदेव! मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं आपका कार्य सिद्ध करूँगा। यदि मुझमें वह क्षमता नहीं होगी तो मैं उस क्षमता को अर्जित करूँगा, किंतु आपका कार्य अवश्य सिद्ध करूँगा। आचार्य द्रोण ने प्रसन्नता के साथ कहा—साधु पुत्र साधु। तुम्हारी गुरुभक्ति तुम्हें अजय करे। अर्जुन! मैं तुम्हें संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होने का आशीर्वाद देता हूँ।

अर्जुन की गुरुभक्ति ने उसे संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बना दिया और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की गुरुभक्ति ने उन्हें शासनमाता बना दिया। १४ फरवरी, १९९७ को लाडनूं में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने फरमाया था—'साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा साध्वियों की पूरी सार-संभाल करती है। उन्हें पूरा स्नेह और आत्मीयता प्रदान करती है। ये साध्वी माता बन गई है।' गुरुदेव तुलसी ने तो उन्हें केवल साध्वियों की माता बनाया था, पर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तो उन्हें संपूर्ण तेरापंथ शासन की माता बना दिया। साध्वीप्रमुखाश्री जी में गुरुभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई थी, रोम-रोम में रमी हुई थी। उनके भाल का तिलक बनी हुई थी। दीक्षा लेते ही उन्होंने संकल्प कर लिया कि जो गुरुदेव फरमाएँगे, मुझे वही करना है। जो गुरु की इच्छा, वही उनकी इच्छा। उनकी गुरुभक्ति में न कोई तर्क, न कोई शर्त, न कोई संकल्प, न कोई विकल्प। लगता है उनकी गुरुभक्ति ने ही उन्हें असाधारण साध्वीप्रमुखा बना दिया।

तेरापंथ धर्मसंघ के २५५ वर्षों के इतिहास में संभवतः ऐसा कभी नहीं हुआ कि आचार्यों की उपस्थिति में कोई साध्वीप्रमुखा आए, तब उनके सम्मान में चतुर्विध धर्मसंघ खड़ा हो जाए। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने हमें वह दृश्य भी दिखाया, जब असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आचार्यप्रवर की सन्निधि में पधारते, तब चतुर्विध धर्मसंघ खड़ा होकर उनका सम्मान करता।

तेरापंथ धर्मसंघ के २६१ वर्षों के इतिहास में संभवतः ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी साध्वीप्रमुखा को दर्शन देने के लिए किसी आचार्यप्रवर ने मात्र ४ दिनों में १५० किलोमीटर की पदयात्रा की हो और यात्रा के अंतिम दिन तो ४७ किलोमीटर चलकर दर्शन किए हों। यह इतिहास दुर्लभ घटना है। जब ६ मार्च, २०२२ को साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को यह ज्ञात हुआ कि आचार्यप्रवर इतना लंबा विहार कर आज ही मुझे दर्शन देंगे तो उनका मन कृतज्ञता के भावों से प्रणत हो रहा था। उस अस्वस्थता की स्थिति में भी उन्होंने पूज्यप्रवर के नाम एक पत्र लिखवाया। उसका कुछ अंश इस प्रकार है—'एक गुरु का अपने शिष्य के प्रति कितना वत्सल भाव होता है। एक दिन में तीन-तीन, चार-चार बार विहार करना शायद तेरापंथ के इतिहास की दुर्लभ घटना है। गुरुदेव इतनी शीघ्रता से पधारकर मुझे दर्शन देने की कृपा करेंगे यह कल्पना का विषय ही नहीं है। आपकी शरण मेरे लिए कल्याणकारी बने, मेरी आत्मा का उद्धार करने वाली बने। शेष-अशेष गुरु चरणों में समर्पण।' साध्वीप्रमुखाश्री जी की गुरुभक्ति ने आचार्यप्रवर को उग्रविहारी बना दिया। केवल आचार्यप्रवर को ही नहीं उनके सहयायी साधु-साध्वियों को भी उग्रविहारी बना दिया।

तेरापंथ धर्मसंघ के २६१ वर्षों के इतिहास में संभवतः ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी आचार्यवर ने किसी साध्वीप्रमुखा को भूमि पर बैठकर वंदना की हो। संभवतः ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि किसी आचार्यवर ने किसी साध्वीप्रमुखा से मंगलपाठ सुना हो। संभवतः ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि किसी आचार्यप्रवर ने किसी साध्वीप्रमुखा से उपवास का प्रत्याख्यान किया हो। एकमात्र परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ऐसे अनेक कार्य कर दिखाए, जो अतीत में किसी आचार्यप्रवर ने नहीं किए।

हमारे धर्मसंघ के अष्टमाचार्य तक के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किन्हीं पूज्यप्रवरों ने अपने समक्ष किसी साध्वीप्रमुखा को पट्ट पर बिठाया हो। एकमात्र साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को एक नहीं, तीन-तीन आचार्यों ने अपने समक्ष पट्ट पर बिठाया। आचार्यप्रवर का साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति विनय और सम्मान का भाव विलक्षण था तो साध्वीप्रमुखाश्री जी की गुरुभक्ति भी अद्वितीय थी, असाधारण थी। उनकी हर धड़कन में मानो गुरुभक्ति का स्वर सुनाई देता था। हमेशा गुरुदृष्टि को ही अपना सर्वस्व मानने वाली उस महान आत्मा ने गुरु दर्शन करते-करते अपना अंतिम श्वास भी गुरु चरणों में समर्पित कर दिया। उस गुरुभक्त महान आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि

लाडनूं।

लाडनूं की पावन भूमि में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। प्रथम चरण में 'ॐ शासन मात्रे नमः' जप का आयोजन हुआ।

द्वितीय चरण में शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी के सान्निध्य में शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा भावांजलि स्वरूप मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। मुमुक्षु डॉक्टर शांता जैन ने प्रमुखाश्री जी के साथ अपनी कुछ यादें साझा कीं। तेरापंथी सभा के मंत्री महेंद्र बाफना एवं तेमम की परामर्शक शोभा दुगड़, उपमंत्री राज कोचर ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी सुनंदाश्री जी व अन्य साध्वीवृंद, समणीवृंद, मुमुक्षु बहनें, तेरापंथी महासभा के पूर्व मंत्री तरुण सेठिया, पार्षद रेणु कोचर सभी ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी स्वास्तिकप्रभा जी ने एक घटना के द्वारा अपने उद्गार व्यक्त किए। श्रमणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की किताब 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' पर अपने भाव व्यक्त किए। हाकम लक्ष्यप्रभा जी ने कहा कि जब उन्हें शासनमाता की उपाधि दी जा रही थी तब हम टीवी में सारा कार्यक्रम देख रहे थे और वह दृश्य आज भी हमें याद आता है।

मुमुक्षु मनीषा ने आपबीती बात सबको बताई। शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी ने कहा कि जितनी करीब से मैंने उनको देखा है मैं इन बातों को शब्दों में नहीं बता सकती। उपासिका डॉ० सुशीला बाफना ने अपने भावों की मौन अभिव्यक्ति दी। सभा संस्था के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य, अन्य सदस्य काफी संख्या में उपस्थित रहे। स्मृति सभा का संयोजन आलोक खटेड़ ने किया।

तृतीय चरण में व्याख्यान संपन्न होते ही साध्वी कल्पनाश्री जी की क्लास हुई। लगभग २५ बहनों ने सहभागिता दर्ज करवाई।

शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि पर उद्गार

श्रद्धासिक्त प्रणाम

● साध्वी शशिप्रभा ●

शासनमाता! लाख कहे जग तेरा चिर विश्राम।
सदियों-सदियों अमर रहेगा तेरा पुण्य प्रकाम।।

कर्ण कुहर में अनुगुंजित आवाज सदा ही,
नयनों में युग नयनों का आभास सदा ही,
रोम-रोम में राजित शुभ आश्वास सदा ही,
साँसों के सरगम में रहती आस सदा ही,
अंगुलियों के पोर, भोर में जपते तेरा नाम।।

हृदय धाम में अष्ट याम प्रवास तुम्हारा,
मृदुल सौम्य सुरम्य रूप वो खास तुम्हारा,
मुसकाती मुद्रा में एहसास तुम्हारा,
रचा हुआ मेहंदी ज्यों रंग सुवास तुम्हारा,
भक्ति भाव से भावित रसना गाए तव गुणग्राम।।

जब-जब मैंने दिल से तुमको याद किया था,
तब-तब तुमने मुझको आशीर्वाद दिया था,
मौनी मन की भाषा का अनुवाद किया था,
बन संजीवन जीवन को आबाद किया था,
शीश नमाऊं बद्धांजलि हो श्रद्धासिक्त प्रणाम।।

शासनमाता प्रथम पुण्यतिथि

● डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

वंदन वंदन रे, आई पुण्य प्रभाती
वैशाखी सुद चवदश पहली पुण्यतिथि मंगलमय
श्रद्धा अर्पण उपकारों को, बोलें हम सब जय-जय।

तेरापंथ की पहली शासनमाता शुभ सुखकारी,
समणी श्रमणी महिला गण में, ऊर्जा नव संचारी।

अर्ध सदी तक गौरवशाली प्रमुखा पद संभाला,
अमर रहेगा भिक्षु गण में, श्रुत का दिव्य उजाला।

पंचाशत ग्रंथों का लेखन संपादन करवाया,
प्रज्ञा कौशल देख तुम्हारा, विद्वत् जग चकराया।

तीन-तीन गुरुओं ने तुम पर कृपा दृष्टि बरसाई,
महाश्रमण गुरु चरण शरण में, नैया पार लगाई।

शब्द अधूरे शब्दकोश के, करने तब गुणवर्णन,
प्रगति पंथ की मिली प्रेरणा, जब-जब बैठी चरणन।।

लय : पालय पालय रे---

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत मानव चैरिटीज, आर०पी०सी०लेआउट में प्रायोजक परिवार विमल, चिराग, यश कटारिया बेमाली बैंगलोर द्वारा बर्तन की व्यवस्था की गई।

मानव चैरिटीज को मैनेज कर रहे विद्या मेंडम ने तेयुप की प्रशंसा की। सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता ने आश्वासन दिलाया कि आगे भी मानव चैरिटीज की सहयाता करते रहेंगे। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, सेवाकार्य संयोजक दिनेश मेहता, मुकेश डागा ने उपस्थित होकर सेवाकार्य किया।

✦ *विकास के इच्छुक व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अपने जीवन के अमूल्य समय एवं श्रम को स्वाध्याय में व्यतीत करे।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

द पावर ऑफ साइलेंस कार्यशाला का आयोजन

गुरुग्राम।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में द पावर ऑफ साइलेंस कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, गुरुग्राम द्वारा किया गया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि मौन में अद्भुत शक्ति होती है। मौन के द्वारा ऊर्जा का संवर्द्धन होता है। मौन के द्वारा शक्ति का संचय एवं वर्धन होता है। ज्ञान बढ़ाने का उत्तम साधन है–मौन। विवाद घटाने की रामबाण औषधि है–मौन। पारिवारिक शांति का पायदान है–मौन। सिर्फ न बोलना ही मौन नहीं है, बल्कि विवेकपूर्ण बोलना एवं वाणी का संयम रखना भी बड़ी साधना है। वाणी संयम के द्वारा बहुत सारी समस्याएँ समाहित हो सकती हैं। इसलिए साइलेंस के पावर को समझें एवं जीवन को आनंदमय बनाएँ।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि जब हम बोलते हैं तो हमारा मस्तिष्क मौन हो जाता है और जब हम मौन रहते हैं हमारा मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है। मस्तिष्क को सक्रिय रखने के लिए मौन जरूरी है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष के०एल० पटावरी, अभिषेक गोयल, डॉक्टर सुनील आर्या, सभा अध्यक्ष विमल सेठिया, निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश जैन टीपीएफ अध्यक्ष विनोद बाफना, सभा मंत्री राजेश कोठारी, टीपीएफ मंत्री भैरव जैन सहित गुरुग्राम, दिल्ली और फरीदाबाद के करीब ८० गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। के०एल० पटावरी ने अपने अनुभव सबके साथ साझा किए।

महिला मंडल अध्यक्ष रूबी बाफना, सभाध्यक्ष विमल सेठिया, अभिषेक गोयल ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल की बहनों ने गीत के माध्यम से मंगलाचरण किया। महिला मंडल अध्यक्ष रूबी बाफना ने साध्वीश्री के मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता व्यक्त की तथा पधारे सभी का आभार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

रामपुराफुल।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इष्ट स्तुति के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम का प्रारंभ किया। हेमंत गर्ग ने अपने अभिभाषण के साथ खुशी जाहिर की। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आज का महत्त्वपूर्ण दिन नारी शक्ति के साथ जुड़ा हुआ है। सर्वशक्तिमान नारी को नई पहचान मिली। विकास का नया धरातल मिला।

आपने आगे कहा कि देश, समाज व राष्ट्र की स्वस्थ परिकल्पना के साथ गुरुदेव तुलसी ने नारी समाज को खुला मंच दिया। रूढ़िवाद, पर्दाप्रथा, शोषण, अत्याचार की जंजीरों से जकड़ी हुई नारी को अपनी अस्मिता की पहचान करवाई। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नारी अब अबला नहीं सबला नारी का सम्मान घर-परिवार, समाज व देश के गौरव को बढ़ाता हैं

साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने गीत को मधुर स्वर देकर परिषद को भावविभोर कर दिया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के प्रधान सुभाष, मंत्री सुरेंद्र, मोहित प्रवीण हेप्पी, संदीप, नवनीत, अशोक, रवि, राजीव, पवन, महेश सभी के सहयोग एवं उपस्थिति ने कार्यक्रम को नया अंजाम दिया।

इस्लामपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष सरिता सिंघी ने अपने सभी का स्वागत किया। अभातेमम राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मनीषा बोथरा ने नारी की अस्मिता को दर्शाते हुए तालमेल के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में स्थानीय सभा के अध्यक्ष उनकी पूरी टीम, तेयुप के अध्यक्ष एवं टीम, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा, ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक तथा समस्त जैन समाज उपस्थित रहा। नरेंद्र बैद, विजय दुगड़, लक्ष्मीपत गोलछा ने अपने विचार व्यक्त किए। पायल सिंघी, शकुंतला दुगड़, समता पटावरी, निष्ठा सिंघी ने कविता के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा नारी की शक्ति को एक एक्शन गीत के द्वारा प्रस्तुत किया।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष प्रेरणा सम्मान लेडी कांस्टेबल पूजा यादव को प्रदान किया गया। पूजा के पिताजी एवं दादाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने महिला मंडल द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रशंसा की।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में तालमेल कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें नीतू श्रीमाल, अंजना भंडारी ने अपने घर, परिवार व व्यवसाय को किस तरह सामंजस्यपूर्ण निभा रहे हैं के बारे में बताया।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने नारी के प्राचीन स्वरूप व वर्तमान स्वरूप के बारे में समझाते हुए कहा कि अपनी मर्यादा में रहते हुए आज की नारी को आगे बढ़ना बहुत जरूरी है।

आभार ज्ञापन संगीता गोलछा तथा मंच संचालन जयश्री सिंघी ने किया।

शिल्पशाला कार्यशाला का आयोजन

कांकरोली।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, कांकरोली द्वारा मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में नया बाजार सभा भवन में 'द पावर ऑफ साइलेंस' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत मुनि सिद्धप्रज्ञ जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंडल की बहनों के द्वारा सुमधुर गीत से मंगलाचरण किया गया।

महिला मंडल की उपाध्यक्ष साधना चोरड़िया ने सभी बहनों का स्वागत किया। मंउल की बहन खुशी तलेसरा और डिंपल सोनी ने कैसे साइलेंस रहकर हम आत्मनिरीक्षण की दिशा में आगे बढ़कर नई-नई उपलब्धियाँ हासिल कर सकते हैं, यह बताया।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि कभी-कभी बोलने से समस्या पैदा हो जाती है। कहाँ बोलना, कितना बोलना, कैसे बोलना इस पर विवेक लगाना होगा। उन्होंने कंठ के कायोत्सर्ग का प्रयोग भी करवाया। मुनि प्रकाशकुमार जी ने बहनों को समझाया कि मन को शांत, सहज और उर्वर बनाने के लिए मौन की साधना हितकारी होती है।

मुनिश्री ने सभी को दिन में कम से कम एक घंटा मौन रखने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन महिला मंडल की उपाध्यक्ष उषा कोठारी ने किया और कार्यक्रम का संचालन कीर्ति कोठारी और मंजु बड़ाला ने किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

द पावर ऑफ साइलेंस

हैदराबाद।

अभातेमम निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद, शिवा सामायिक जोन, मानसरोवर द्वारा कार्यशाला 'द पावर ऑफ साइलेंस' आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व मंगलाचरण शिवा सामायिक जोन की बहनों द्वारा की गई। पधारी हुई सभी बहनों का स्वागत अध्यक्ष अनीता गिडिया ने व शिवा जोन की बहन सोनल बैद ने किया।

समता बैंगानी व कमला नाहटा ने कार्यशाला मौन के लिए शुभकामनाएँ दी। कमला ने कहा कि कम बोलने से स्मरण शक्ति का विकास होता है। अपेक्षा बाफना ने गीतिका का संगान किया।

कार्यशाला में पधारी मुख्य वक्ता बबीता बैद ने कार्यशाला के विषय पर वक्तव्य दिया। चंपा देवी बैद, कमला बोथरा, रेनू बागरेचा, निवेदिता सुराना, चित्रा नाहटा ने मौन के बारे में अपने भाव रखे।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका रीता सुराणा ने प्रेक्षाध्यान के बारे में व क्रोध आने पर किस तरह शांत किया जाए, जानकारी दी। प्रियंका बागरेचा ने गीतिका का संगान किया। चित्रा नाहटा ने कविता के माध्यम से भाव रखे। कार्यशाला का संचालन रेनू बैंगानी ने हिंदी, मारवाड़ी भाषा में किया। मंत्री श्वेता सेठिया ने पधारी हुई सभी बहनों का आभार ज्ञापन किया।

हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन

हासन।

अभातेमम के निर्देशानुसार हासन तेमम द्वारा हिंसा-अहिंसा कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संगीता कोठारी ने सभी बहनों का स्वागत किया और आज के विषय पर अपने विचारों की प्रस्तुति देते हुए कहा कि प्राणियों की हिंसा से जो प्रोडक्ट बनते हैं हमें उनका उपयोग नहीं करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि नवयुवती बहनों ने Life without crutly पर लघु नाटिका से अपनी प्रस्तुति दी। बहुत सी बहनों ने संक्षेप में विचार प्रस्तुत किए। विनीता सुराणा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

विजयनगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित हिंसा वर्सेस अहिंसा के अंतर्गत Lifestyle without Cruelty पर तेमम द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान के साथ किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता रहे कर्नल डॉ० नवाज शरीफ एवं एनिमल राइट्स फंड के मैनेजिंग ट्रस्टी दिलीप बाफना। उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने सभी का स्वागत किया। मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथियों का परिचय दिया मोनिका गांधी ने। मंडल से तत्त्ववेता बरखा पुगलिया ने विषय पर अपने विचार रखे।

दिलीप बाफना ने विचार व्यक्त किए। एनिमल राइट्स फंड के सदस्य नितिन जैन ने अपने भाव व्यक्त किए। ज्ञानवर्धक नाटिका की प्रस्तुति की गई। नवाज शरीर ने भी हिंसा वर्सेस अहिंसा पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुमित्रा बरड़िया तथा आभार ज्ञापन अनीता जीरावला ने किया। दोनों वक्ताओं का सम्मान मंडल द्वारा किया गया। बहनों को संकल्प पत्र भी भरवाए गए। कार्यशाला में कोषाध्यक्ष मंजु भंसाली, सहमंत्री अंजु सेठिया, प्रचार-प्रसार मंत्री ललिता डागा, कार्यकारिणी सदस्य एवं बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

गुवाहाटी।

समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्श प्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशन में तेमम, गुवाहाटी द्वारा हिंसा अहिंसा पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। अध्यक्ष मंजु भंसाली ने सभी का स्वागत किया। मंत्री सुशीला मालू ने संचालन किया। समणी विपुलप्रज्ञा जी ने महिला मंडल की बहनों को संबोधित करते हुए हिंसा-अहिंसा के बारे में बताया एवं समझाया।

कार्यकारिणी सदस्य डॉ० सारिका दुगड़ ने भी अपने भाव प्रकट किए। महिला मंडल की सराहनीय उपस्थिति से यह कार्यक्रम सफल हुआ।

उम्मीद एक बेहतर कल की

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार निर्माण परियोजना के अंतर्गत तेमम, राजराजेश्वरी नगर द्वारा उम्मीद एक बेहतर कल की प्रोजेक्ट में कन्नड़ एवं इंग्लिश प्राइमरी मॉडल स्कूल मागड़ी रोड में मीठी वाणी विषय पर क्लास करवाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से की गई। इसके पश्चात सपना छाजेड़ ने नौ बार ॐ की ध्वनि का प्रयोग करवाया एवं इसके लाभ के बारे में बच्चों को बताया।

संगीता डागा ने कहानी एवं उदाहरण के माध्यम से मीठी वाणी के कमाल एवं फायदे बताए। मंत्री सीमा छाजेड़ के द्वारा बच्चों को जनरल नॉलेज के प्रश्न पूछे गए एवं सही उत्तर देने वालों को पुरस्कृत किया गया। दीपाली गोलछा ने बच्चों को गुड़ हैबिट्स के बारे में जानकारी दी।

प्रमिला जैन ने बच्चों को बेस्ट आउट ऑफ बेस्ट ऐक्टिविटी करवाई, जिसमें बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। संगीता कुंडलिया ने बच्चों को गुड टच, बैड टच के बारे में बताया। स्कूल के अध्याप और प्रिंसिपल ने मंडल द्वारा किए गए कार्य की सराहना की। सभी बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कार वितरण किए गए। लगभग २०० बच्चों की उपस्थिति रही।

भगवान ऋषभ की दीक्षा के उपलक्ष्य में प्रारंभ हुआ वर्षीतप

● मुनि कमल कुमार ●

जैन धर्म अनादिकाल से चला आ रहा है। जैन धर्म की मान्यतानुसार अनंत चौबीसियाँ हो गई हैं और आगे भी यह क्रम गतिमान है। भगवान ऋषभ इस काल के प्रथम तीर्थंकर हुए जो आदिनाथ नाम से विख्यात हुए। भगवान ऋषभ नामि राजा के पुत्र थे जिनकी माता का नाम मरुदेवा था। दीक्षा से पूर्व आपने शादी भी की। आपकी दो पत्नियाँ थीं जो सुनंदा और सुमंगला के नाम से जानी जाती रही हैं। आपका परिवार बहुत बड़ा था। आपके १०० पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। अपने बड़े बेटे भरत को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर आप दीक्षित हो गए।

ऋषभ की दीक्षा के साथ चार हजार लोग देखा-देखी दीक्षित हो गए, परंतु वे भूख-प्यार के परीषहों से विचलित हो स्वच्छंद हो गए। ऋषभ ने चैतबदि अष्टमी को दीक्षा ली और मौन ध्यान की साधना में लीन रहने लगे। घरों में गोचरी के लिए जाते तो लोग बड़ी भक्ति से हीरे-पन्ने, हाथी-घोड़े आदि-आदि बहराते। ऋषभ तो साधु बन गए उन्हें तो प्रासुक आहार-पानी की आवश्यकता थी। लोगों ने सोचा इतने बड़े योगी को रोटी-पानी जैसी साधारण चीज क्या दी जाए, इसलिए किसी ने भी आहार-पानी नहीं बहराया। ऋषभ मनोबली थे। वे अपनी साधना में लगे रहे। तेरह महीने दस दिन बीत गए परंतु ऋषभ का चित्त कंपायमान नहीं हुआ। एक दिन सोमप्रभ के पुत्र श्रेयांस को मेरू सिंचन का स्वप्न आया और राजदरबार में १०८ इक्षु रस के घड़ों की भेंट आई हुई थी। श्रेयांस की दृष्टि ज्यों-ही भगवान ऋषभ पर पड़ी और सोचा इनसे बड़ा मेरू क्या होगा, उसने भगवान की वंदना कर गोचरी की। भावना भाई भगवान ज्यों-ही महलों की ओर गतिमान हुए श्रेयांस कुमार के खुशी का पार नहीं रहा और ज्यों-ही घड़ों को उठाकर रस बहराया तो आकाश मार्ग से अहोदानं-अहोदानं की ध्वनि हुई।

प्रथम दानदाता भगवान का ही पड़पौत्र श्रेयांस कुमार बना। लोगों को जब पता चला कि ये तो भगवान हैं, इन्हें हीरे-पन्ने, सोने-चाँदी, हाथी-घोड़ों की आवश्यकता नहीं है इन्हें तो शरीर चलाने के लिए प्रासुक आहार-पानी की आवश्यकता है तो लोग अपने अज्ञान के लिए पश्चाताप करने लगे।

वर्तमान में भी भगवान के दीक्षा दिवस पर सैकड़ों-हजारों लोग एक दिन छोड़कर लगभग तेरह महीने दस दिन अर्थात् चैतबदि अष्टमी से तपस्या प्रारंभ कर बैसाख शुक्ला तृतीया तक तप करते हैं, जिसे वर्षीतप नाम से जाना जाता है।

तेरापंथ समाज में यह क्रम विधिवत् आचार्यश्री तुलसी के युग से व्यवस्थित चल रहा है। इस वर्ष का कार्यक्रम गुजरात के प्रसिद्ध शहर सूरत में आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में मनाया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश से सैकड़ों तपस्वी भाई-बहनों का आना होगा। सूरत के सैकड़ों भाई-बहनों ने अपने आराध्य देव के शुभागमन पर वर्षीतप प्रारंभ किया है। कई अपने वर्षीतप को संपन्न करेंगे तो अनेक नए भाई-बहन वर्षीतप का संकल्प भी करेंगे। वर्षीतप की उत्कृष्ट साधना करने वाले सामायिक जाप प्रतिक्रमण रात्रि भोजन परिहार के साथ शीलव्रत और समता की विशेष साधना करें जिससे आत्मा स्वास्थ्य के साथ आपसी मनमुटाव और तनाव भी समाप्त हो सके। ऐसी तपस्या से आत्मकल्याण के साथ संघ प्रभावना होती है।

तेरापंथ में अनुशासन, मर्यादा, सेवा ही प्राण तत्त्व है

नोखा।

तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य, एक विचार, एक आचार वाला अनूठा धर्मसंघ है। इसमें चाहे कितना ही विद्वान हो, बड़े पद पर हो तब भी सेवा केंद्रों में अपनी सेवा देना अनिवार्य है। गंगाशहर बड़ेरा साध्वियों की 'अमर चाकरी' करके पहुँची साध्वी कीर्तिलता जी के स्वागत में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने यह उद्गार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद ने गीतिका द्वारा सबको भाव-विभोर कर दिया। साध्वी कीर्तिलता जी ने सफल अमर चाकरी पर हर्ष व्यक्त करते हुए गुरु कृपा एवं साध्वी राजीमती जी को विशिष्ट कोहिनूर बताया।

साध्वी शक्तिलता जी, साध्वी पूनमप्रभा जी, साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने गीतिका द्वारा भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मधुर स्वरों में अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया गया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

राजाजीनगर।

नेमीचंद हरीश कुमार कोठारी के नवीनीकृत प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया, राणित कोठारी एवं अरविंद दुगड़ ने विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप द्वारा कोठारी परिवार को मंगलभावना यंत्र एवं मंगलभावना पत्र भेंट किया। तेयुप परामर्शक चंद्रेश मांडोत ने कोठारी परिवार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, सुनील मेहता एवं जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील सिंघवी उपस्थित थे।

पाणिग्रहण संस्कार

पर्वत पाटिया।

मंगलचंद सुराणा की सुपुत्री पूजा जैन का पाणिग्रहण संस्कार गणेशलाल जैन के सुपुत्र गुणवंत जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, पवन बुच्चा व रवि मालू ने मंगलभावना पत्रक की स्थापना करवाकर पाणिग्रहण संस्कार संपन्न करवाया।

दोनों पक्ष स्थानकवासी संप्रदाय से हैं। वर व वधू दोनों ने आजीवन व्यसनमुक्त रहने के आध्यात्मिक त्याग किए।

दोनों परिवार को परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

जयपुर।

बाबूलाल छाजेड़ की सुपुत्री मधु जैन का विवाह संस्कारक गनपतमल ललवानी के सुपुत्र बसंत ललवानी के साथ जैन सस्कार विधि से संस्कारक पन्नालाल पुगलिया व सुरेंद्र सेठिया ने मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर संपन्न करवाया।

दोनों परिवारों को परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

गंगाशरह।

भीनासर निवासी संपतलाल बुच्चा की सुपुत्री नीरज का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी संपतलाल मरोठी के सुपुत्र मुकेश के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक रतनलाल छलाणी, देवेंद्र डागा और विपिन बोथरा ने मांगलिक मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक भजनों के संगान के साथ संपन्न करवाया।

तेममं, गंगाशहर की पूर्व अध्यक्षा मंजू आंचलिया ने दोनों परिवारों की तरफ से जैन संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

गोरेगाँव।

बोरियापुरा निवासी वाशी प्रवासी पारसमल बाफना के सुपुत्र नितेश बाफना का शुभ पाणिग्रहण संस्कार बोरज निवासी मोरल प्रवासी सुरेश परमार की सुपुत्री मीनल के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेश ओस्तवाल सहयोगी संस्कारक अशोक चौधरी और पवन परमार ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप वाशी द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष के०एल० परमार, कुंदन बोहरा, महिला मंडल पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री तरुणा बोहरा, तेयुप के अध्यक्ष महावीर सोनी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सूरत।

छापर निवासी, सूरत प्रवासी पंकज नाहटा के सुपुत्र अक्षय नाहटा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सादुलपुर निवासी, किशनई प्रवासी उम्मेदकुमार धाड़ेवा की सुपुत्री प्रियाशा धाड़ेवा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा व बजरंब बैद ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

विवाह संस्कार को जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाने में सभा के अध्यक्ष नरपत कोचर की विशेष प्रेरणा रही। पंकज नाहटा व उम्मेद कुमार धाड़ेवा ने संस्कारकों व उपस्थिति सभी महमानों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

✦ *अनैतिकता और अनाचार से उपार्जित धन महत्त्वहीन होता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

आत्माराम

यह गुप्त मन की तीसरी अवस्था है। इसमें चेतना के अतिरिक्त कोई बाह्य आलंबन नहीं होता। मन आत्मा में विलीन हो जाता है। वह कषाय (क्रोध आदि के रंगों) से मुक्त होकर शुद्धोपयोग (शुद्ध चेतना) में परिणत हो जाता है। इस स्थिति को इन शब्दों में भी समझाया जा सकता है कि यहाँ शुद्ध चेतना या चैत्य पुरुष से भिन्न-भिन्न मन का कोई अस्तित्व ही नहीं रहता।

संस्कृत की एक धातु है–'ध्यैं चिन्तायाम्'। ध्यान शब्द उससे निष्पन्न हुआ है। उस धातु के अनुसार ध्यान शब्द का अर्थ होता है–चिंतन।

चिंतन का प्रवाह चंचलता की ओर जाता है और ध्यान का प्रवाह स्थिरता की ओर। इसी आधार पर ध्यान की एक परिभाषा मिलती है–'एकाग्रचिंता निरोधो ध्यानम्।' एक आलंबन पर चिंतन को रोके रखना ध्यान है। हमारा चिंतन अनेक विषयों पर चलता रहता है, वह ध्यन नहीं है। किंतु वह चिंतन एक विषय पर स्थिर हो जाता है, वह ध्यान है।

चिंतन में एक संतति का होना आवश्यक नहीं है किंतु ध्यान में एक संतति का होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। इसी आशय को लक्ष्य में रखकर ध्यान की एक परिभाषा की गई है–'विषयांतरास्पर्शवती चित्तसन्ततिर्ध्यानम्'–चित्त की वह संतति (प्रवाह) जो अवलंबित विषय के अतिरिक्त दूसरे विषयों का स्पर्श नहीं करती, ध्यान कहलाती है। इससे फलित होता है कि ध्यान सामान्य चिंतन नहीं है किंतु एक ही विषय पर जो चिंतन की धारा प्रवहमान होती है, वह ध्यान है। जल की एक बूँद गिरती है और टूट जाती है। दूसरी बूँद गिरती है और फिर क्रमभंग हो जाता है। इस प्रकार क्रमभंग कर गिरने वाली बूँदों से ध्यान की तुलना नहीं की जा सकती। ध्यान की तुलना उस धार से की जा सकती है, जिसमें क्रमभंग नहीं होता।

उक्त परिभाषाओं से फलित होता है कि ध्यान स्थिरता की दिशा में बढ़ने वाला चिंतन है। इसी आशय को 'एकाग्रे मनः सन्निवेशनं' के द्वारा व्यक्त किया गया है।

प्रश्न–ज्ञान और ध्यान में क्या अंतर है?

उत्तर–ध्यान ज्ञान की ही एक अवस्था है–'व्यग्रं ज्ञानं एकाग्रं ध्यानं'–जो चंचल है, वह ज्ञान और स्थिर ज्ञान ही ध्यान है। ध्यानशतक में इसी आशय को स्पष्ट किया गया है–जं थिरमज्झवसाणं झाणं तं चलंतयं चित्तं'–जो स्थिर चैतन्य है, वह ध्यान है और जो चल चैतन्य है, वह चित्त है। बर्फ को जल से भिन्न नहीं कहा जा सकता। जल तरल होता है तब जल कहलाता है। वही घनीभूत होकर बर्फ कहलाता है। ज्ञान और ध्यान की यही स्थिति है।

प्रश्न–जप और ध्यान में क्या अंतर है?

उत्तर–जप में शब्द का उच्चारण होता है। ध्यान में शब्द का उच्चारण नहीं होता है।

प्रश्न–मानसिक जप में शब्द का उच्चारण नहीं होता, क्या वह भी ध्यान है?

उत्तर–यह ठीक है कि उसमें शब्द का उच्चारण नहीं होता किंतु उसका पुनरावर्तन होता है। ध्यान में न शब्द का उच्चारण होता है, न पुनरावर्तन। सामान्यतया जप ध्यान नहीं है–किंतु कभी-कभी एकाग्रता की मात्रा बढ़ जाने पर वह ध्यान से अभिन्न हो जाता है।

प्रश्न–यदि पुनरावर्तन नहीं होता तो ध्यान में क्या किया जाता है?

उत्तर–ध्यान में ध्येय को देखा जाता है। वास्तव में ध्यान का चिंतन अर्थ व्युत्पत्तिलभ्य है। उसका प्रवृत्तिलभ्य अर्थ है–अंतर्निरीक्षण, मानसिक चक्षु से देखना–साक्षात्कार करना। ध्यानकाल में हम जिसका आलंबन लें, वह मानसिक चक्षु से आलेखित चित्र की भाँति स्पष्ट दीखने लग जाए तब ध्यान निष्पन्न होता है। हम ध्यान करने के लिए बैठते हैं तब किसी शब्द या आकृति का आलंबन लेते हैं। आलंबित शब्द और आकृति जब तक मानसिक चक्षु से स्पष्टतः दीखने नहीं लग जाती, तब तक धारणा की स्थिति चलती है, ध्यान की स्थिति प्राप्त नहीं होती। जब आलंबित विषय साक्षात् हो जाता है तब धारण ध्यान के बिंदु पर पहुँच जाती हैं।

एक आलंबन पर मन को टिकाना ध्यान का प्रारंभ है, पूर्णता नहीं। उसकी पूर्णता निरोध अवस्था में प्राप्त होती है।

(१) मन का निरोध (मन का संवर)
(२) वाणी का निरोध (वाणी का संवर)
(३) शरीर का निरोध (शरीर का संवर)
(४) श्वास का निरोध (श्वास का संवर)

जब ये चारों निरुद्ध हो जाते हैं तब ध्यान की वास्तविक कक्षा प्राप्त होती है। यही जैन परिभाषा में संवरयोग है।

प्रश्न–एकाग्रता या स्थिरता और निरोध में क्या अंतर है?

उत्तर–दीया हवा में पड़ा है। उस समय उसकी लौ बहुत चंचल होती है। उसे कमरे के भीतर निर्वात प्रदेश में रख देने पर उसकी लौ स्थिर-शांत हो जाती है। तेल या घी के समाप्त होने पर दीया बुझ जाता है, लौ समाप्त हो जाती है। दीये की पहली अवस्था चंचल है, दूसरी स्थिर और तीसरी निरुद्ध। ज्ञान की तुलना हवा में रखे हुए दीये से की जा सकती है। एकाग्र-ध्यान की तुलना निष्प्रकंप दीये से हो सकती है। निरोधात्मक ध्यान बुझे हुए दीये जैसा होता है। उसमें मन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। हमारा चैतन्य शाश्वत है। मन शाश्वत नहीं है। मन मन्यमान होता है अर्थात् वर्तमानकाल में होता है। मनन से पहले क्षण में मन नहीं होता और उसके उत्तरक्षण में भी मन नहीं होता। इसका आशय यह है कि मन मननकाल में उत्पन्न होता है जो उत्पन्न होता है, उसके अस्तित्व का विलय भी होता है। निरोधात्मक ध्यान की प्रक्रिया यही है कि अनुत्पन्न मन को उत्पन्न नहीं करना। मन को उतपन्न न करने का अर्थ है–कल्पना, स्मृति और इच्छा से मुक्त हो जाना।

प्रश्न–मन का निरोध, निद्रा और मूर्च्छा क्या एक नहीं है?

उत्तर–निद्रा में मन का निरोध नहीं होता। उसमें स्थूल मन निष्क्रिय हो जाता है किंतु सूक्ष्म मन (अवचेतन मन) काम करता रहता है। इसलिए निद्रा मानसिक निरोध की स्थिति नहीं है।

मूर्च्छा में आत्मबोध विस्मृत होता है किंतु मनोनिरोध की अवस्था में आत्मबोध अधिक तीव्र हो जाता है। ध्यान का अर्थ ही है–आत्मानुभूति या प्रत्यक्षानुभूति। इसलिए ध्यान और मूर्च्छा की दिशा एक नहीं है। मूर्च्छा में बाह्य बोध और आंतरिक बोध दोनों के प्रति शून्यता होती है। ध्यान में बाह्य बोध के प्रति शून्यता होती है किंतु आंतरिक बोध अधिक जागरूक हो जाता है।

प्रश्न–कायोत्सर्ग और ध्यान में क्या अंतर है?

उत्तर–शरीर की चंचलता का विसर्जन किए बिना मन की चंचलता विसर्जित नहीं होती। इस दृष्टि से कायोत्सर्ग ध्यान का आधार है। कायोत्सर्ग में शारीरिक स्थिरता की प्रधानता होती है जबकि ध्यान में मानसिक स्थिरता की।

ध्यान का एक अर्थ केवल स्थिरता किया गया है। उस परिभाषा के आधार पर हमारे आचार्यों ने ध्यान के तीन प्रकार बतलाए हैं।

(१) कायिक ध्यान–शरीर की चंचलता का विसर्जन, कायोत्सर्ग या कायगुप्ति।
(२) वाचिक ध्यान–वाणी की चंचलता का विसर्जन, मौन या वचोगुप्ति।
(३) मानसिक ध्यान–मन की चंचलता का विसर्जन, मनोगुप्ति।

इन भेदों के आधार पर ध्यान की परिभाषा यह हो सकती है–'कायवाङ् मनसां स्थिरीकरणं ध्यानम्।' श्वास की स्थिरता शरीर की स्थिरता से संलग्न है।

प्रश्न–समाधि और ध्यान में क्या अंतर है?

उत्तर–ध्यान से मन का समाधान होता है, इसलिए ध्यान स्वयं समाधि है। किंतु परिभाषा की दृष्टि से समाधि ध्यान की उच्चतम स्थिति है। ध्यान की जिस भूमिका में मन पूर्णरूपेण निष्क्रिय हो जाता है, केवल चैतन्य का जागरण रहता है, उस स्थिति का नाम समाधि है। महर्षि पतंजलि के अनुसार वह योग का आठवाँ अंग है। जैन वाङ्मय के अनुसार वह ध्यान का ही एक विशिष्ट रूप है।

ध्यान की विधि

ध्यान करने से पहले शरीर को स्थिर करें। वह बिलकुल न हिले-डुले। फिर दो-तीन मिनट उसे सूचना दें कि वह शिथिल हो रहा है। फिर यह सूचना दें कि श्वास शिथिल हो रहा है। शरीर और श्वास दोनों शिथिल हो जाएँ तब यह सूचना दें कि मन शिथिल हो रहा है। जब मन शिथिल हो रहा हो, उस समय या तो चिंतन का सर्वथा बंद कर दें, वैसा न कर सकें तो अर्हत्, सिद्ध आदि जो भी इष्ट हो, उस शब्द को याद कर उसके अर्थ पर मन को एकाग्र करें। जो ध्येय है उसे प्रत्यक्ष देखने का प्रयत्न करें।

ध्यान करने वाला पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। आँखें या तो मुँदी हुई हों या अधखुली। वे यदि खुली हों तो मानसिक कल्पना से उन्हें वहीं नासाग्र पर केंद्रित किया जाए।

ध्यान-काल में आसन कष्टदायी नहीं किंतु सहज होना चाहिए। ध्यान के लिए सामान्यतः पद्मासन, पर्यंकासन, कायोत्सर्गासन आदि आसन सुझाए गए हैं। किंतु ये ही आसन होने चाहिए, ऐसा आग्रह नहीं है। आचार्य शुभचंद्र ने लिखा है–जिस आसन में बैठने पर मन निश्चल हो, वही आसन करणीय है।

येन केन सुखासीना, विद्ध्युर्निश्चलं मनः।
तत्तदेवं निधेयं स्यात्, मुनिभिर्बन्धुरासनम्।। ज्ञानार्णव।।

ध्यान तदात्मकता

ध्यान करने वाले को तदात्मक होने का अभ्यास डालना चाहिए अर्थात् जिसका ध्यान करे, उसके साथ एकात्मकता स्थापित करनी चाहिए। क्रिया के साथ भी तदात्मकता हो तो वह भी ध्यान हो जाता है। जो बोले उसमें मन का योग साथ रहे तो वह बोलना भी ध्यान है। जप, भावना या स्वाध्याय में तन्मय होने पर एकाग्रता की मात्रा ध्यान के बिंदु तक पहुँच जाती है। उसमें वाणी का व्यापार होने पर भी एकाग्रता की उपयुक्त मात्रा के कारण वह वाचिक ध्यान कहलाता है। जो करे उसमें मन का योग साथ रहे तो वह करना भी ध्यान है। तन्मयता से जो किया जाता है वह सद्यः फलदायी होता है। ध्यान करने वाला ध्येय की संप्राप्ति के लिए अपने शरीर व मन को शून्य बना लेता है। ऐसा करने पर ध्येय और ध्याता में एकात्मकता हो जाती है। इसी को योगशास्त्र के आचार्यों ने एकीकरण, समरसी भाव, समापत्ति या समाधि कहा है।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३७) क्षपिताशेषकर्मा हि, मुनिर्भवाद् विमुच्यते।
मुच्यते चान्यलिङ्गोऽपि, गृहिलिङ्गोऽपि मुच्यते।।

अशेष कर्मों का क्षय करने वाला मुनि भव से मुक्त होता है। मुक्त होने में आत्म-शुद्धि की प्रधानता है, लिंग-वेश की नहीं। जो वीतराग बनता है वह मुक्त हो जाता है, भले फिर वह अन्यलिंगी—जैनेतर साधु के वेश में हो या गृहलिंगी—गृहस्थ के वेश में हो।

मुक्ति की आधारशिला है—आत्म-विशुद्धि। आत्म-शुद्धि के लिए वीतरागता की अपेक्षा है। राग-द्वेष से मुक्त वही होता है जो वीतराग है। आचार्य कहते हैं—

सिताम्बरत्वे न दिगम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षपाताश्रयणाच्च मुक्तिः, कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।।

'मोक्ष न श्वेत वस्त्रों के पहनने में है, न वस्त्रों का त्याग करने में है, न तर्कवाद में है, न तत्त्वचर्चा में है और न पक्षपात का आश्रय लेने में है। मुक्ति है कषाय-विजय में।'

राग, द्वेष और कषाय की स्थिति में मुक्ति नहीं होती, यह ध्रुव सिद्धांत है। गीता में कहा है—'जो लोग अभिमान और मोह से मुक्त हो गए हैं, जिन्होंने आसक्तियों को जीत लिया है, जो निरंतर अध्यात्म में लीन रहते हैं, जिनकी इच्छाएँ शांत हो गई हैं, जो सुख-दुःखात्मक द्वंद्वों से विमुक्त हैं और जो अमूढ़ हैं वे शाश्वत स्थान को पाते हैं।

आचार्य कुंदकुंद ने प्रवचनसार में कहा है—'सिद्ध वे होते हैं जो शुद्ध होते हैं। शुद्धि में ही साधुता है, दर्शन है, ज्ञान है और मुक्ति है।'

अमृतचंद्राचार्य के शब्दों में भी यही है—आत्मा को अशुद्ध करने वाले राग, द्वेष आदि पर-द्रव्य हैं। जो इन्हें छोड़ स्व-आत्मा में रति करता है वह समस्त पर-द्रव्यों से मुक्त हो जाता है। फिर आत्म-ज्योति प्रकट होती है और चैतन्य के आलोक से वह भर जाता है, पूर्ण शुद्ध होकर फिर मुक्त हो जाता है।

राग-द्वेष की मुक्ति के लिए आत्म-बल की अपेक्षा है। इसमें वर्ण, जाति, लिंग, वेश आदि का महत्त्व नहीं है। ये गौण हैं। मोक्ष अवस्था की स्थिति में प्रत्येक मुक्तात्मा में समानता होती है। मुक्ति का द्वार सबके लिए खुला है। **(क्रमशः)**

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न १५ : जीव के उदय निष्पन्न के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : जीव के उदय निष्पन्न के तैंतीस प्रकार हैं—
चार गति, छह काय, छह लेश्या, चार कषाय, तीन वेद, मिथ्यात्व, अविरति, अमनस्कता अज्ञानित्व, आहारता, सयोगिता, संसारता—असिद्धता, अकेवलित्व—छद्मस्थता।
अजीवोदय निष्पन्न के तीन प्रकार हैं—पाँच शरीर, पाँच शरीर के प्रयोग में परिणत पुद्गल द्रव्य, पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस और आठ स्पर्श। ये वैसे जीवाश्रित होते हैं।

प्रश्न १६ : औपशमिक भाव के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : औपशमिक भाव के ग्यारह प्रकार हैं—(१) उपशांतक्रोध, (२) उपशांतमान, (३) उपशांतमाया, (४) उपशांतलोभ, (५) उपशांतराग, (६) उपशांतद्वेष, (७) उपशांतदर्शनमोह, (८) उपशांतचारित्रमोह, (९) औपशमिक सम्यक्त्व, (१०) औपशमिक चारित्र, (११) उपशांत कषाय—छद्मस्थ वीतराग।
औपशमिक के संक्षिप्त प्रकार दो भी मिलते हैं—(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) औपशमिक चारित्र

प्रश्न १७ : क्षायिक भाव के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : क्षायिक भाव के तेरह प्रकार हैं—
(१) केवल ज्ञान, (२) केवल दर्शन, (३) आत्मिक सुख, (४) क्षायिक सम्यक्त्व, (५) क्षायिक चारित्र, (६) अटल अवगाहन, (७) अमूर्ति, (८) अगुरुलघु, (९) दान लब्धि, (१०) लाभ लब्धि, (११) भोग लब्धि, (१२) उपभोग लब्धि, (१३) वीर्य लब्धि।
क्षायिक के ३१ प्रकार भी हैं—(१) ज्ञानावरणीय के—५, (२) दर्शनावरणीय—९, (३) वेदनीय—२, (४) मोहनीय—२, (५) आयुष्य—४, (६) नाम—२, (७) गोत्र—२, (८) अंतराय—५
सिद्धों के इकतीस गुण ये ही माने गए हैं। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी

अणगार मेघ

राजगृह के महाराज श्रेणिक एक बार सिंहासन पर उदास बैठे थे। सदा की भाँति अभयकुमार पिता को प्रणाम करने आया। अपने पिता को चिंतित देखकर अभय ने चिंता का कारण जानना चाहा। महाराज श्रेणिक ने चिंता को मिटाने वाला समझकर अभय से कहा—'वत्स! चिंता का एक ही कारण है, तेरी विमाता धारिणी के गर्भ के योग से मनोभाव बने हैं कि 'मैं महाराज के साथ हाथी पर सवार होकर वन-क्रीड़ा करने जाऊँ। उस समय वर्षा हो रही हो, चारों ओर हरियाली से वन, वनस्थली खिल रही हो।' बस, इसी चिंता में दुर्बल हो रही है। इस असमय में वर्षा कैसे हो?'

अभयकुमार ने सांत्वना देते हुए कहा—'मैं माताश्री की भावना को पूरी करने का प्रयास करूँगा। आप चिंता न करें।'

अभयकुमार पौषधशाला में गया। तीन दिन का तप करके ध्यान में बैठ गया। अपने पूर्व परिचित देव को आमंत्रित किया। तीन दिन के बाद देवता आया। धारिणी का मनोरथ पूरा करने को अकाल में देवता ने वर्षा की। महारानी भी महाराज के साथ हाथी पर चढ़कर वन में गई। हरित भूमि को देखकर परम प्रसन्न हो उठी।

सवा नौ महीनें के बाद पुत्र का जन्म हुआ। मेघ के दोहद से सूचित था अतः पुत्र का नाम मेघकुमार रखा। युवावस्था में आठ राजकन्याओं के साथ विवाह किया गया। एक बार भगवान् महावीर वहाँ पधारे। मेघकुमार उपदेश सुनकर संयम लेने को उद्यत हुआ। माता से जब आज्ञा लेनी चाही तब माता ने कहा—'पुत्र! तेरे इस कोमल शरीर से संयम का निर्वाह कठिन है। संयम का पथ तलवार की पैनी धार पर चलने जैसा है। इसलिए सांसारिक वैभव का उपभोग करो।' लेकिन जब महारानी धारिणी ने देखा कि मेघकुमार की भावना तीव्र है। यह किसी भाँति संसार में रहने को तैयार नहीं हो रहा है तब मोह को एक ओर करते हुए कहा—'मेरा कहना मानकर कम से कम एक दिन का राज्य तो कर लो।' सोचा था, राज्य-सिंहासन मिलते ही उसमें फँस जाएगा। पर हुआ उलटा। माता-पिता के आग्रह से जब राज्याभिषेक कर दिया गया, तब मेघ बोला—'अब मेरी आज्ञा सबको मान्य होगी ही। अतः शीघ्रातिशीघ्र रजोहरण एवं पात्र लाओ। मैं संयम लूँगा।' राजसी ठाठ को ठुकराकर मेघकुमार संयमी बन गया।

रात्रि के समय मेघमुनि को सोने के लिए स्थान द्वार के पास मिला। रात में संतों के आने-जाने के कारण मेघमुनि को नींद नहीं आई। नींद नहीं आने से मेघमुनि खिन्न हो गए। विचारों में शिथिलता आ गई। पहले तो सारे मुनिगण इतने प्रेम से बोलते थे। पास में बिठाते थे। आज इन्होंने मुझे यों फुटबाल बना रखा है। पहली रात में ही यह हाल है तो आगे क्या शुभ की आशा की जाए। मैं तो प्रातःकाल प्रभु से पूछकर घर चला जाऊँगा।

प्रातःकाल होते ही प्रभु को पूछने तथा उपकरण संभलाने के लिए मेघमुनि प्रभु के पास आए, वंदना की। भगवान् तो पहले ही मेघमुनि की मनोभावना देख चुके थे। अतः संबोधित करते हुए एवं प्रबुद्ध करते हुए कहा—'मेघ! एक रात्रि के कष्ट से तू यों घबरा गया? अधीर हो उठा। घर जाने को तैयार हो गया, पर तुझे याद है तू पिछले जन्म में कौन था? देख, तू पिछले जन्म में हाथियों के झुंड का स्वामी था। अनेक हथिनियों के साथ मस्त बना रह रहा था। तू पहले एक बार मेरुप्रभ हाथी के भव में दावानल में जल चुका था। इसलिए अगली बार तू चार कोस भूभाग के वृक्षों को तथा घास-फूस को उखाड़कर अपने आपको सुरक्षित अनुभव कर रहा था। संयोगवश एक बार वन में दावानल लगा। जंगल के सभी जीव-जंतु उसी मैदान में आ गए, जहाँ तू रह रहा था। वह मंडल जीवों से भर गया था। तू खड़ा था। तेरे पैर में खुजलाहट चली। तूने पैर को खुजलाने के लिए ऊपर किया। इतने में तेरे पैर के स्थान पर एक शशक आ बैठा। तूने पैर नीचे रखना चाहा तो उस खरगोश को देखकर सोचा, मेरे कारण यह मर जाएगा। यों तीन दिन तक ऊपर पैर किए खड़ा रहा। इतने में दावानल शांत हुआ। सारे प्राणी अपने-अपने स्थान की ओर चले गए। जब तूने पैर नीचे किया तब तक पैर अकड़ चुका था। पैर जमीन पर रखते ही तू गिर गया। वहाँ तेरी मृत्यु हो गई। वहाँ से मरकर तू राजा का पुत्र हुआ। मेघ! पशु-भव में तो तूने सारी बातें सुधारीं। इस मनुष्य-जीवन में थोड़े-से कष्ट से घबराकर बात बिगाड़ रहा है। जरा सोच, कितनी विचार की बात है?' **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 मार्च, 2023

✦ *विवेक के अभाव में शक्ति का दुरुपयोग भी हो सकता है, इसलिए तुम अपने विवेक को जागृत करो।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

इंडियन योग एसोशिएशन राज्य समितियों का राष्ट्रीय सम्मेलन

तनाव मुक्ति का अमोघ साधन है योग

अणुव्रत भवन, दिल्ली।

इंडियन योग एसोशिएशन का राष्ट्रीय अधिवेशन पूज्य श्री श्री रविशंकर जी महाराज की अध्यक्षता में अणुव्रत भवन सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी पदमश्री स्वामी श्री भारत भूषण जी, गुरुजी डॉ० एच०आर० नागेंद्र, डॉ० ईश्वर वासवारेड्डी सहित कई गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति थी। अणुव्रत भवन आगमन पर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी व योग एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष के०सी० जैन ने सभी संत जनों व एसोसिएशन के पदाधिकारियों का स्वागत किया। सभी संत जनों ने अणुव्रत भवन में विराजित शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के दर्शन किए व अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व योग के संदर्भ में प्रभावी चर्चा की।

इस अवसर पर शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन आचार्यश्री तुलसी की अनुपम देन है। प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान योग वर्तमान तनाव भरे वातावरण के लिए संजीवनी है, जिसके प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी रहे। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी पूरे देश में पदयात्रा कर जन-जन को नैतिकता, सद्भावना व नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं। श्रीश्री रविशंकर आदि प्रमुख योग गुरुओं ने शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी से साक्षात् योग विषयक महत्त्वपूर्ण वार्तालाप कर प्रसन्नता व धन्यता का अनुभव किया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी, साध्वी सूरजयशा जी, साध्वी समाधिप्रभा, साध्वी ओजस्वीप्रभा जी भी उपस्थित थीं।

सर्वप्रथम योग एसोशिएशन की एक्जक्यूटिव काउंसिल की पूर्व अध्यक्ष माँ डॉ० हंसा योगेंद्र ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा सबका अभिवादन करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम बहुत ही ऐतिहासिक है। योग की सभी संस्थाओं का केंद्रीय संगठन इंडियन योग एसोसिएशन आज व्यापक रूप से योग पर कार्य कर रहा है। इसका यह अधिवेशन जैन धर्म के अणुव्रत भवन में होना भी अपने आपमें विशिष्ट है। पूज्य श्रीश्री सहित सभी वरिष्ठ संतवृंद की उपस्थिति में यह कार्यक्रम हो रहा है। यह अपने आपमें विरल है। कार्यक्रम में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित न हो पाने पर उन्होंने खेद जताया।

विभिन्न प्रदेशों से पधारे हुए एसोसियेश के योग कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए स्वामी भारत भूषण जी ने कहा कि कार्यक्रम बहुत ही भव्य है। योग जोड़ने का कार्य करता है। उन्होंने योग की सूक्ष्मता पर प्रकाश डाला और इसे केवल आसन, प्राणायाम तक सीमित करने अथवा इसे विकृत रूप से प्रस्तुत करने के प्रति जागरूकता पर बल दिया।

परमार्थ निकेतन के पूज्य स्वामी श्री चिदानंद सरस्वती जी ने कहा कि जिस स्थान पर हम हैं व अपने आपमें बहुत ही दिव्य स्थान है, उन्होंने इंडियन योग संस्थान का संगठन, स्वरूप, नीति निर्धारण, प्रशिक्षण, शोध अनुसंधान, कार्य योजना व उच्च शिक्षा में योग आदि पर बल दिया और साथ ही अणुव्रत भवन में विराजमान शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी से हुई वार्ता का भी उल्लेख किया।

उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि आज का मंच वास्तव में सबको जोड़ने वाला है। अलग-अलग क्षेत्रों से पधारे इतने विद्वान संतों का इस अणुव्रत भवन में आगमन अद्भुत है। उन्होंने कहा कि वर्तमान तनाव भरे वातावरण में योग व ध्यान वह माध्यम है जिससे व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक तनावों से मुक्त रह सकता है।

इस अवसर पर आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री व इंडियन योग एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री श्री रविशंकर जी महाराज जी ने कहा कि आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली संतुलित करने के लिए विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वित रूप प्रेक्षाध्यान प्रस्तुत किया। सन् १९८२ में जब आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अणुव्रत भवन में थे हम तब २४ वर्ष के थे, उस समय हमने एक सप्ताह यहाँ रहकर ध्यान का अभ्यास किया, अणुव्रत भवन से हमारी गहरी स्मृतियाँ हैं। आज इस भवन को और भव्य बना दिया गया है। यह अत्यंत पवित्र स्थल है। यहाँ यह कार्यक्रम होना ही अपने आप में योग के महत्त्व को बढ़ाता है। प्रश्नों के उत्तर देते हुए महाराजश्री ने कहा कि योग सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास एक अभिनव प्रयोग है।

इस अभिनव आयाम को जन-जन तक ले जाने के लिए ही इंडियन योग एसोसिएशन का गठन हुआ। योग शिक्षा से ही सकारात्मक भावधारा, सहनशीलता और आंतरिक शक्तियाँ पुष्ट हुई हैं। उन्होंने कहा कि योग सर्वप्रथम घर से प्रारंभ होता है। वही व्यक्ति दूसरे की समस्या दूर कर सकता है, जो स्वयं की समस्या ठीक कर सकता है। वर्तमान में योग एक ऐसी विधा है जो स्वयं की समस्या का समाधान देता है और दूसरे की समस्या का समाधान भी करता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि समर्पित भाव से कार्य कर सभी गतिविधियों से जुड़कर अपने योगतंत्र को शक्तिशाली बनाना है। हर क्षेत्र में हमें इसके लिए कार्यकर्ताओं, प्रशिक्षकों का निर्माण करना है और अच्छे प्रशिक्षकों की आवश्यकता है, जिससे वह प्रशिक्षण के कार्य को कर सकें।

इस अवसर पर गुरुजी डॉ० एच०आर० नागेंद्र ने कहा कि आज और व्यापक स्तर पर योग के कार्य को करना है। योग ही वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना को साकार कर सकता है। उन्होंने इंडियन योग एसोसिएशन की स्थापना, इसके इतिहास व इसके विकास और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने अणुव्रत भवन में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आज अणुव्रत भवन में सभी संतों का आगमन हम सबके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने जैन धर्म में योग व ध्यान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आविष्कार कर मानवता के लिए बहुत बड़ा वरदान दिया।

कार्यक्रम का संचालन एक्जूक्यूटिव काउंसिल के जनरल सेक्रेट्री सुबोध तिवारी ने किया।

इस अवसर पर २२ राज्यों से पधारे एक्जूक्यूटिव मैम्बर्स, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के न्यासी शांति कुमार जैन, सुशील राखेचा, सुशील बोथरा व प्रमोद घोड़ावत, पी०सी० कपूर, डॉ० एस०पी० मिश्रा, डॉ० डी०आर० कार्तिकेयन, डॉ० राघवेंद्र राव प्रो० सरोज शर्मा सहित कई महानुभावों की सहभागिता रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में इंडियन योग संस्थान व अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के कार्यकर्ताओं की प्रमुख भूमिका रही।

✦ *गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है–छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव का शुभारंभ

दिल्ली।

प्रतिवर्ष २१ जून को आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का शुभारंभ १०० दिन पहले ही आयुष मंत्रालय द्वारा किया जाता है और फिर योग दिवस तक इस संबंध में विभिन्न आयोजन देश के विभिन्न भागों में किए जाते हैं। वर्ष २०२२-२३ के योग दिवस का शुभारंभ १३ मार्च को आयुष मंत्री भारत सरकार सर्बानंद सोनोवाल की अध्यक्षता में दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में लगभग ५००० व्यक्तियों की उपस्थिति में हुआ।

कार्यक्रम में संस्कृति मंत्री किशन रेड्डी मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बिरेंद्र सिंह, विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी, आयुष राज्यमंत्री महेंद्र भाई कालू भाई, व्यासा के कुलाधिपति डॉ० एच०आर० नागेंद्र आयुष सचिव वैध राजीव कोटेचा, अतिरिक्त आयुष सचिव त्रिपाठी, संयुक्त सचिव कविता गर्ग, अंतर्राष्ट्रीय एथलीट हिमा दास और अनेक अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अध्यात्म साधना केंद्र के मानद डायरेक्टर और पूर्व चीफ कमिश्नर के०सी० जैन ने कमल कुमार जी का परिचय देते हुए कहा कि योग चित्त वृत्ति निरोध अथवा इंद्रियों के संयम की बात सिखाता है। मुनि कमल कुमार जी एक सहज योगी हैं, जिन्होंने ४४ वर्ष की लंबी तपस्या में भूख पर विजय स्थापित की है, वाणी का संयम किया है और द्रुत गति से दीर्घ पद यात्राएँ करते हुए दो बार भारत भूमि को नापा है। ऐसे संत ही अपनी साधना से योग की महत्ता के प्रति आकर्षण का आधार बनते हैं।

विशेष रूप से आमंत्रित और प्रमुख वक्ता के रूप में अपनी विशिष्ट शैली में प्रभावी वक्तव्य देते हुए उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए एक ओर शारीरिक स्वास्थ्य हेतु आसन-प्राणायाम की महत्ता बताई। वहीं आंतरिक स्वास्थ्य हेतु ध्यान की उपयोगिता पर बल डाला। उन्होंने जनमानस का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि प्रधानमंत्री मोदी सरकार के नेतृत्व में चलाए जा रहे इस आंदोलन में विश्व कल्याण निहित है और इसे जन-जन की सहभागिता से ही संभव बनाया जा सकता है।

कार्यक्रम से पूर्व मुनिश्री का कार्यक्रम में आए सभी विशिष्ट व्यक्तियों से व्यक्तिगत चर्चा हुई और मुनिश्री ने जैन जीवन चर्या और जैन परंपरा में योग विषय पर संकेत की भाषा में प्रकाश डाला, क्योंकि उस समय मुनिश्री मौन अवस्था में थे।

ज्योतिर्मय व्यक्तित्व : साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

रामपुराफुल।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम समायोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी केवलप्रभा जी के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी की अनुपम कृति साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा। जिनका जीवन अनेक दुर्लभ क्षमताओं का दस्तावेज है। आपकी सौम्य मुखमुद्रा, मधु-मुस्कान व पवित्र आभामंडल से अनहद आत्म शांति की अनुभूति हमने की है। आपकी बौद्धिक क्षमता, वाक्पटुता, कार्यकुशलता, सक्रियता, जागरूकता अतुलनीय रही।

आपने आगे कहा कि जिनका ज्योतिर्मय व्यक्तित्व, पौरुष से भरा अजेय कर्तृत्व, ओजभरा नेतृत्व ने तेरापंथ धर्मसंघ में विकास के नूतन स्वस्तिक उकेरे। सुनहरी स्मृतियों से सराबोर दायित्व के ५० वर्ष साधिक कार्यकाल शासनमाता का स्वर्णिम कालखंड धर्मसंघ की अनुपम धरोहर बन गई। अस्तु श्रद्धासुमन समर्पित कर रही हूँ।

साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने बीते पल की स्मृतियों को तरोताजा करते हुए कहा कि जैन शासन की अमूल्य निधि, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने त्रय, गुरुओं की असीम कृपा-प्रसाद पाया। संपूर्ण साध्वी समाज में चित्त समाधि के अभिनव पुष्प खिलाए। साध्वी संवरविभा जी ने प्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व को कविता के माध्यम से उजागर किया। असाधारण प्रमुखाश्री जी का जीवन दर्शन हम सबके लिए आदर्श है।

इस अवसर पर श्रावक समाज की ओर से उत्साही, सक्रिय कार्यकर्ता मोहनलाल गर्ग, नवनीत गर्ग हेमंत, शशिप्रभा, भारती आदि ने अपनी भावना वक्तव्य एवं गीतिका के माध्यम से प्रेषित की। संचालन साध्वी हेमंतप्रभा जी ने किया।

मधु, नीतू, कांता दयावंती, लक्ष्मी, इंदु, शालु, सुलोचना, नैना, प्रिया, निधि, पारीणिका, अरुणा आदि की सहभागिता रही।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के विविध आयोजन

कटक

संकल्पों से संसार सजाने का सुंदर उपक्रम है—अणुव्रत। अणु अर्थात् छोटा व्रत, अर्थात नियम। जन-जन में मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित करने के पवित्र उद्देश्य से आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति, कटक द्वारा अणुव्रत आंदोलन के अमृत महोत्सव ७५वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत अमृत रैली एवं कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अहिंसा भवन बाखराबाद से रैली का प्रारंभ प्रवक्ता उपासक पानमल नाहटा ने मंगलपाठ एवं कटक म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के मेयर सुभाष सिंह द्वारा झंडा लहराकर किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत तेममं द्वारा मंगलाचरण से हुई। अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने स्वागत भाषण के साथ अतिथि का परिचय प्रदान किया। संस्थापक अध्यक्ष सुनील कोठारी ने अणुव्रत अनुशास्ता के मंगल संदेश का वाचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोक सेवा मंडल वाइस चेयरमैन निरंजन रथ ने उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि शिबो टोप्पो, एडीएम ने अणुव्रत का विवेचन किया। कार्यक्रम की संयोजिका प्रतिभा सिंघी ने अमृत महोत्सव की जानकारी प्रदान की। कल्पना जैन एवं किरण बैंगानी ने किशोर मंडल और कन्या मंडल के साथ अणुव्रत के ११ नियमों पर विवेचन करते हुए प्रस्तुति दी।

वरिष्ठ श्रावक मंगलचंद चोपड़ा एवं महासभा कार्यकारिणी सदस्य मुकेश सेठिया ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में अतिथियों का साहित्य एवं दुपट्टे से सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन संतोष सिंघी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन उषा चोरड़िया एवं सुनीता बैंगानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में Aditional District Majistrate एवं लोगों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरकर अणुवत को स्वीकार किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं अणुव्रत के सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

जसोल

नवकार माध्यमिक विद्यालय, जसोल एवं अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली ७५वें वर्ष एवं अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारंभ पर अणुव्रत कार्यक्रम आयोजित हुआ।

सर्वप्रथम नवकार स्कूल के बालक-बालिकाओं ने नवकार मंत्र, अणुव्रत गीत के द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रधानाचार्य किरण कोठारी ने कहा कि अणुव्रत के नियम से एक व्यक्ति स्वच्छ समाज की रचना कर सकता है, जीवन में कभी नशा न करें, हमें व्यसन की बुरी आदतों का त्याग करना है।

चंद्रप्रकाश खत्री ने कहा कि किसी की बुराई मत करो और न किसी का बुरा सोचना चाहिए।

अणुव्रत समिति के मंत्री सफरुखान ने कहा कि युवा वर्ग जो हमारे देश का भविष्य माना जाता है वही सबसे ज्यादा नशे में डूबा हुआ है, नशे के कारण ही न जाने कितने घर बर्बाद हो गए हैं, भविष्य में नशा न करना चाहिए विक्रम सिंह ने आभार व्यक्त किया। स्कूल के बच्चों ने जीवन में कभी नशा नहीं करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, मंत्री सफरुखान, स्कूल प्रधानाचार्य किरण कोठारी, लक्ष्मण सिंह रजोत, चंद्रप्रकाश खत्री, माणक राठौड़, शिल्पा शर्मा, नम्रता सोनी, धातु राठौड़ सहित अणुव्रत समिति के सदस्य उपस्थित थे।

आसींद

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली ७४ वर्ष की परिसंपन्नता एवं ७५वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस वर्ष को अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में मनाने की स्वीकृति प्रदान की। इसी क्रम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

हर व्यक्ति बड़े त्याग नहीं कर सकता, महाव्रत स्वीकार नहीं कर सकता, इस हेतु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। देश की आजादी के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति में मानवीय एवं नैतिक मूल्य के विकास हेतु अणुव्रत के रूप में छोटे-छोटे नियम बनाए जिससे व्यक्ति अपना आध्यात्मिक जीवन जीते हुए संयमित जीवनशैली अपनाकर अपना, परिवार, समाज एव राष्ट्र के उत्थान में योगदान दे सके। यह विचार शासनश्री साध्वी जसवती जी ने अणुव्रत अमृत रैली को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

साध्वी ऋषभप्रभा जी, साध्वी ज्योत्सना कुमारी जी, साध्वी अनेकांतप्रभा जी एवं साध्वी मननीयप्रभा जी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कन्हैयालाल दुगड़, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल ओस्तवाल ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुआ। मंगलाचरण अनिल गोखरू ने किया। महिला मंडल की ओर से चेतना कावड़िया ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री कैलाशचंद शर्मा ने किया। इससे पूर्व अणुव्रत अमृत रैली तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई दुगड़ निवास पहुँचकर सभा के रूप में परिवर्तित हुई।

प्रेम और सौहार्द की होली खेलें

रामपुराफुल।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में होली पावस का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी के मधुर स्वर सरगम के साथ हुआ।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर्व प्रधान संस्कृति रही है। यहाँ पर्वों की बहुलता बताई गई है। विभिन्न घटना-प्रसंग इस होली त्योहार के साथ जुड़े हुए हैं। आपने आगे कहा कि हर इंसान अपने कषायों की होली जलाए आपसी कटु व्यवहार का दहन करे। जिससे जीवन में खुशियों का सावन आए। रंगों के इस पावन पर्व के साथ रंगों का ध्यान करें। रंग चिकित्सा के आधार पर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सुंदर निर्माण करता है।

इस अवसर पर मोहनलाल गर्ग ने गीत की पंक्तियों में तेरापंथ धर्मसंघ को पाकर अपने भाग्य की सराहना में प्रशंसा करने लगे। भारती जैन, प्रवीणा जैन व शशिप्रभा जैन ने अपनी भावना गीत की प्रस्तुति के साथ की।

इसके पश्चात् रंगों के साथ लेश्याध्यान का प्रयोग चला। यहाँ पर सभी का उत्साह सराहनीय रहा।

✦ *जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

नूतन ज्ञानशाला का शुभारंभ

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में जी०टी० रोड लिलुआ में विधिवत ज्ञानशाला शुभारंभ का कार्यक्रम हुगली रेसीडेंसी में हुआ। जिसमें १३ बालक-बालिकाएँ थे। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि संस्कार जीवन की बुनियाद है। सद्संस्कारों का ज्ञान वर्तमान युग में अक्षर ज्ञान से भी ज्यादा जरूरी है। इसके बिना किताबी ज्ञान की महत्ता की सुरक्षा कैसे की जा सकेगी। शिक्षा के साथ सद्संस्कारों का ज्ञान जरूरी है।

ज्ञानशाला के माध्यम से व्यक्ति चहुँमुखी विकास कर सकता है। ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी का महत्त्वपूर्ण आयाम है और नौनिहाल पीढ़ी को चारित्रवान बनाने का विशेष उपक्रम है। प्रशिक्षिकाएँ उत्साह व निष्ठा के साथ बच्चों के विकास में सहयोगी बने।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने विचार रखे। कोलकाता व दक्षिण बंगाल प्रभारी डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने ज्ञानशाला के बारे में बताया कि क्षेत्रीय ज्ञानशाला सहयोगी मंजु घोड़ावत, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बबीता पारख, वंदना बरड़िया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रमिल बाफना ने विचार रखे। ज्ञानार्थी पारस लुणिया ने गीत का संगान किया। प्रिया डागा एवं मनीषा दुगड़, ज्ञानशाला में सहायक के रूप में सेवा देगी। वंदना बरड़िया को मुख्य प्रशिक्षिका के रूप में मनोनीत किया गया। इस अवसर पर जैन समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

तेरापंथी सभा द्वार-द्वार पहुँच सार-संभाल करे

नोखा।

संस्था शिरोमणी तेरापंथी महासभा संपूर्ण भारत में तेरापंथी सभाओं की सार-संभाल करके अनुशासित, मर्यादित, गुरु-इंगित आराधना और महासभा के कार्यक्रमों की जानकारी समस्या-समाधान हेतु नोखा आंचलिक प्रभारी राजेश बांठिया और शाखा प्रभारी भेरूदान सेठिया के पहुँचने पर तेरापंथी सभा द्वारा अभिनंदन किया गया।

बांठिया ने नोखा सभा के कार्यक्रमों, ज्ञानशाला, सेवा की सराहना करते हुए संघीय कार्यक्रमों में और जुड़ने का आह्वान किया।

सेठिया ने बीकानेर चोखले की सक्रीय तेरापंथी सभा में नोखा की सभा को अनोखा बताया, जागरूक सभा बताया।

सभा अध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा, मंत्री लाभचंद छाजेड़, इंदरचंद बैद, उपाध्यक्ष सुनील बैद, उपासक अनुराग बैद, पूर्व अध्यक्ष हनुमानमल ललवाणी, दिलीप बैद, तेयुप अध्यक्ष गजेंद्र पारख, मंत्री अरिहंत सालेचा, ज्ञानशाला प्रभारी महावीर नाहटा, किशोर मंडल सदस्य, महिला मंडल, कन्या मंडल सभी उपस्थित रहे।

साध्वी राजीमती जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित, अनुशासित है। महासभा अपने दायित्व से कार्य कर रही है। कोई परिवार दुखी, पीड़ित न रहे, श्रावकों, पदाधिकारियों को ध्यान देकर सार-संभाल करनी चाहिए।

धर्म जागरण में गूंजे संगीत के स्वर

श्रीडूंगरगढ़।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अनुशास्ता गणाधिपति तुलसी की पुण्यतिथि पर बोथरा प्रांगण में धर्म जागरणा का आयोजन मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के सान्निध्य में हुआ। मुनि अमन कुमार जी ने गीत का संगान किया। आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व और नेतृत्व को व्याख्यायित करते हुए बताया कि उन्होंने न केवल जैन तेरापंथ संघ बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए जो अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान तथा नया मोड़ देकर उपकार किया।

तेरापंथ सभा के मंत्री पवन सेठिया, मोहनलाल सेठिया, अमित मालू, सुमित बरड़िया ने मधुर संगान करते हुए समा बांधा। महिला मंडल की पूर्व मंत्री शारदा बोथरा, सरिता बोथरा, मधु झाबक ने गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर राजकरण तातेड़, पवन बोथरा, मोहन बोथरा, मुकेश बोथरा, प्रकाश बरड़िया, रोहित सुराणा, विनय, लक्की बोथरा, मनोज बोथरा, संयम बरड़िया, इचू देवी बरड़िया, उमराव बुच्चा, मंजु बोथरा, करुणा बरड़िया, मिनल बोथरा, नेहा बोथरा आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन मधुर संगायक सुमित बरड़िया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 मार्च, 2023

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

फिट युवा-हिट युवा

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा हिट युवा-फिट युवा के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शाखा में खेलों का आयोजन किया, जिसमें तेयुप, सूरत के कार्यकारिणी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयंसेवकों ने भाग लिया। सभी सदस्यों ने खेलों का आनंद पारंपरिक खेलों के साथ-साथ टीम वर्क के खेल दिमागी खेल तथा व्यायाम का आनंद लिया।

तेयुप के पूर्व कार्यकारिणी सदस्य एवं एक्टिविटी कंसलटेंट दीपक चोरड़िया द्वारा गीत की प्रस्तुति की गई तथा तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया द्वारा अपने भाव की अभिव्यक्ति दी गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक प्रमोद द्वारा आरएसएस और तेरापंथ समाज का गहरा संबंध है इस विषय में जानकारी दी। सभी सदस्यों का आपस में परिचय करवाया गया एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आभार व्यक्त किया गया।

गोरेगाँव (मुंबई)।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, गोरेगाँव के अध्यक्ष रमेश सिंघवी की अध्यक्षता में, मंत्री सुमित चोरड़िया के मार्गदर्शन में, संयोजक रवि डागा के संयोजन में एवं मनीष कोठारी के निर्देशन में हिट युवा-फिट युवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेयुप साथियों ने विजय गीत का संगान किया।

तेयुप अध्यक्ष उपासक रमेश सिंघवी ने पधारे हुए सभी युवाओं का स्वागत किया। युवा चुस्त-दुरुस्त कैसे रह सकें, इसका प्रशिक्षण इस उपक्रम के अंतर्गत देने का प्रयास किया जाता है। युवक चुस्त-दुरुस्त रहेंगे, तभी वे परिवार, समाज और देश की सेवा कर सकेंगे।

तत्पश्चात सभी ने लगभग ४ किलोमीटर मॉर्निंग वॉक किया एवं प्रकृति के मनोरम दृश्य सुबह की ताजगी का आनंद लिया। योगा प्रशिक्षक गोपाल सिंघवी ने आँख, गर्दन, कान, रीढ़ की हड्डी, पेट आदि पूरे शरीर का व्यवस्थित योगा कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी पदाधिकारियों और तेयुप के युवा साथियों की अच्छी सहभागिता रही।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सुमित चोरड़िया ने किया।

अभातेयुप संगठन यात्रा

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप संगठन यात्रा तथा साथियों को संगठन मजबूत करने के लिए गेट टुगेदर तेयुप राजाराजेश्वरी नगर द्वारा रिसोर्ट में रखा गया। अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप की संगठन यात्रा का आगाज परिषद प्रभारी तेजराज चोपड़ा के नेतृत्व में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नवकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात तुलसी संगीत सुधा साथियों ने विजय गीत का संगान किया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने किया। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने पधारे हुए सभी का स्वागत जैन पट्ट से किया एवं सभी सदस्यों की जागरूकता और संघ निष्ठा के बारे में अभातेयुप साथियों को बताया। मंत्री विपुल पितलिया एवं परिषद प्रभारी तेजराज चोपड़ा ने परिषद की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

कार्यशाला में बैंगलोर अभातेयुप से विमल कटारिया, दिनेश मरोठी, सतीश पोरवाल, महावीर टेबा ने अपने विचार व्यक्त किए। धमाल गेट टुगेदर कार्यक्रम के प्रायोजक हनुमानमल, संजयकुमार, मनोजकुमार बैद का आर्थिक सहयोग रहा। तेयुप सदस्यों एवं किशोर मंडल सदस्यों की कुल ६५ सदस्यों की उपस्थिति रही। संचालन तेयुप मंत्री विपुल पितलिया ने किया। सुशील भंसाली ने आभार ज्ञापन किया।

सेवा के बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत गीता आश्रम आर०पी०सी० लेआउट में प्रायोजक परिवार आनंद बोलिया-स्व० पुखराज बोलिया की याद में अनाथ बच्चों को नाश्ता और बक्स चॉकलेट्स आदि देने की व्यवस्था की गई। गीता आश्रम के मैनेजर हरी ने तेयुप की प्रशंसा की।

तेयुप, विजयनगर कोषाध्यक्ष आलोक गंग, सेवाकार्य सहसंयोजक मुकेश डागा और बोलिया परिवार ने उपस्थित होकर बच्चों के सेवाकार्य में अपनी सहभागिता निभाई।

तेरापंथ समाज में हर्ष की लहर

नोखा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने गुजरात 'अणुव्रत यात्रा' करते हुए आगामी विक्रम संवत् २०८० का नोखा में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी का चातुर्मास करने की घोषणा की।

सभा उपाध्यक्ष इंदरचंद बैद ने बताया कि साध्वी राजीमती जी बहुश्रुत परिषद सदस्या योग साधिका, तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट विरल विभूति शासन गौरव अलंकरण से विभूषित बेजोड़ साध्वी हैं। नोखावासी धन्य हैं १० वर्षों से नोखा को पावन सान्निध्य मिल रहा है।

सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा मंत्री लाभचंद छाजेड़ उपाध्यक्ष इंदरचंद बैद, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल सभी संस्था श्रावक-श्राविकाओं ने प्रसन्नता व्यक्त की। आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

✦ *जहाँ तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वियों में शिरोमणि - संघ में हीर कणी

हिसार।

शासनश्री सरोज कुमारी जी, शासनश्री यशोधरा जी एवं हिसार उपसेवा केंद्र व्यवस्थापिका डॉ० साध्वी शुभप्रभाजी आदि के सान्निध्य में शासनमाता की वार्षिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रे नमः' जय से हिसार मॉडल टाउन भवन गुंजायमान हो उठा।

साध्वी चिरागप्रभा जी ने अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने अपने संस्मरण सुनाए। साध्वी नीतिप्रभा जी ने कहा कि अनगढ़ पत्थर में प्राण फूँककर मूर्ति का आकार दिया करती थी शासनमाता। साध्वी मंदारप्रभा जी ने शासनश्री राजकुमारी जी एवं भगिनीद्वय की लिखित भावनाओं का वाचन किया।

डॉ० साध्वी शुभप्रभा जी ने शासनमाता के अंतिम समय के अविस्मरणीय संस्मरणों का हृदयस्पर्शी वर्णन करते हुए कहा कि मैंने लगभग शासनमाता की सन्निधि में अंतिम समय तक प्रतिक्रमण साथ में किया। यह सुनहरा अवसर मुझे मिला। साध्वियों की सामूहिक स्वरलहरी से ऐसा लगा मानो शासनमाता साक्षात उपस्थित है। विजय जिंदल ने गीतिका के द्वारा शासनमाता के चरणों में अपनी भावना का अर्घ्य चढ़ाया।

शासनश्री साध्वी यशोधरा जी ने कहा कि समुद्र कभी याचना नहीं करता। नदियाँ स्वयं आकर उसमें मिलती हैं। क्योंकि उसमें पानी समाने की योग्यता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने पात्रता, योग्यता का, अर्हता का इतना विकास किया कि समय-समय पर आचार्यों ने उन्हें अनेक अलंकरणों से नवाजा।

शासनश्री सरोजकुमारी जी ने कहा कि गुरुदेवश्री तुलसी की पारखी नजरों ने साध्वी कनकप्रभाजी को परखा। हीरे का मूल्य व परीक्षण एक कुशल जौहरी ही कर सकता है, साधारण व्यक्ति नहीं। आपके विनय, समर्पण और गुरु भक्ति ने तलहटी से शिखर तक पहुँचा दिया।

साध्वी ऋजुयशा जी ने मंच का संचालन किया। श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति अच्छी रही।

अणुव्रत अमृत महोत्सव

कांकरोली, राजसमंद।

आचार्यश्री तुलसी द्वारा अणुव्रत आंदोलन के ७५वें वर्ष में प्रवेश पर अणुव्रत समिति, राजसमंद द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए। पर्यावरण बचाओ की थीम पर विशाल रैली का आयोजन किया गया। मुनि प्रकाश कुमार जी के सान्निध्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ।

महिला मंडल, कांकरोली की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत द्वारा मंगलाचरण किया गया। मुख्य अतिथि अणुव्रत सेवी जीतमल कच्छारा थे। अध्यक्षता डॉ० वीरेंद्र महात्मा ने की। विशिष्ट केंद्रीय पदाधिकारी अशोक डूंगरवाल, जगजीवन राम चोरड़िया, सभाध्यक्ष प्रकाश सोनी, रैली संयोजक मदननलाल धोका, संयोजक रमेश मांडोत, कांकरोली महिला मंडल की अध्यक्ष इंदिरा पगारिया की उपस्थिति रही।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि दो तरह का पर्यावरण होता है—भीतर और बाहर का। भीतर के पर्यावरण से व्यक्ति तनावग्रस्त होता है, परेशान होता है और बाहर का पर्यावरण दूसरों को परेशान करता है। अणुव्रत उपाय है अपव्यय कम करने का।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि आजादी और अणुव्रत दोनों का आपस में संबंध है। अणुव्रत के बिना आजादी अधूरी है और आजादी के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। प्रारंभ में योग प्रशिक्षक जगदीश चंद्र बैरवा ने जीवन विज्ञान योग प्रयोग करवाए।

समिति के अध्यक्ष डॉ० वीरेंद्र महात्मा ने विचार व्यक्त किए। अर्थ सहयोगी अशोक डूंगरवाल, स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं व अतिथियों का साहित्य भेंट कर स्वागत किया।

संस्कार पब्लिक स्कूल के ७० एवं गायत्री विद्या मंदिर किशोर नगर के २० विद्यार्थियों को मुनि प्रकाश कुमार जी ने अणुव्रत आचार संहिता की शपथ दिलवाई। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष लता मादरेचा, महिला मंडल की बहनें तथा राजनगर से विजय कोठारी, डूंगरवाल, नंदलाल बाफना सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार प्रकाश सोनी ने एवं संचालन रमेश मांडोत ने किया।

शासनमाता की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित 'स्मरणांजलि कार्यक्रम'

शासनमाता के प्रति भावांजलि प्रस्तुत करते हुए महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया

महरौली, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी एवं प्रबुद्ध साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली के साधनामय प्रांगण में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन 'स्मरणांजलि' का दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकप्रिय सांसद माननीय लहरसिंह सिरोहिया की उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम में महासभा, अभातेममं, जैन विश्व भारती, अमृतवाणी, जय तुलसी फाउंडेशन, अणुव्रत न्यास, जीतो, भगवान महावीर मेमोरियल ट्रस्ट के वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की भव्यता को शतगुणित कर दिया।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी पुण्यात्मा थी, भव्यात्मा थी। उस पुण्यात्मा का जन्म कलकत्ता में हुआ नाम कला दिया गया, फिर दीक्षा केलवा में और साध्वी कनकप्रभा बनी। उनके जीवन में ककार का योग था। साध्वीप्रमुखा बनने के बाद पहली दीक्षा भी मेरी हुई। मेरा नाम कमल कुमार। वो कर्मशील थी, श्रमशील थी विनयशील थी, सहज, सरल व निस्पृद थी। समता, ममता व क्षमता की मूरत थी। पचास वर्ष तक वात्सल्य संभृत नेतृत्व कर संघ के हर व्यक्ति के दिल को जीता। संपूर्ण संघ को अपनी ममता से संपोषित किया। सचमुच वो शासन की माता थी। पूज्य गुरुदेव ने शासनमाता का सार्थक संबोधन प्रदान कर उनके कर्तृत्व को अमर कर दिया।

पूज्य गुरुदेव ने चार तीर्थ की उपस्थिति में कार्यक्रम मनाने की अनुज्ञा प्रदान कर हम पर अनुग्रह किया है। मेरे दीक्षा पर्याय के ५० वर्ष में पहली बार साधु-साध्वियों की संयुक्त सन्निधि में यह कार्यक्रम हुआ है। साध्वी अणिमाश्री जी कुशल प्रवचनकार एवं वैशिष्ट्य संपन्न साध्वी है। संघ की प्रभावना करने वाली दक्ष साध्वी है। दिल्ली में विराजित अन्य साध्वियाँ कार्यक्रम में अस्वस्थता के कारण उपस्थित नहीं हो सकी, किंतु साध्वी अणिमाश्री जी ने सबकी ओर से संपूर्ति कर दी है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अहर्निश वात्सल्य की धारा प्रवाहित करने वाली वो अध्यात्म की पवित्र गंगोत्री थी। जिस स्थल पर उन्होंने देह का विसर्जन किया उसी पुण्य धरा पर हम आज प्रथम पुण्यतिथि मना रहे हैं। उनकी पुनित सन्निधि में आने वाला हर व्यक्ति निश्चिंतता की अनुभूति करता था। वो कुशल पथदर्शिका थी। भूले-भटके साधक का उन्होंने सम्यक् पथ दर्शन किया। उन्होंने अपनी आत्मीय अनुशासना से साध्वी समाज में शक्तिपात किया। उसी शक्ति की बदोलत आज उनका साध्वी समाज विकास के सोपानों पर आरोहण कर रहा है उनकी अनुशासना में साध्वी समाज का कर्तृत्व मुखर हुआ। वर्चस्व स्थापित हुआ एवं नेतृत्व के नए नगमें गूँजित हुए। नैसर्गिक प्रतिभा की धनी साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने असाधारण कार्यों से त्रय गुरुओं के दिल में गरिमामय स्थान बनाया। आचार्य महाश्रमण जी ने तो उनको असाधारण साध्वीप्रमुखा का संबोध प्रदान कर उनके असाधारण कतृत्व व नेतृत्व को कालजयी बना दिया।

काल के भाल पर सृजन के अमिट हस्ताक्षर करने वाली कालजयी साध्वीप्रमुखाश्री जी की पुण्यतिथि दम उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिवर की सन्निधि में मना रहे हैं। मुनिवर हमारे धर्मसंघ के फरदीसंत हैं। मुनिश्री तो तप की मूरत के साथ-साथ श्रम की मूरत है। आपका श्रम हमारे लिए प्रेरणा है। आपकी प्रमोद भावना मन को आह्लादित करने वाली है। समणी जी के आगमन से आज पाँच तीर्थ की उपस्थिति में यह कार्यक्रम हुआ है। दिल्ली सभा के लिए सौभाग्य की बात है। दिल्ली सभा ने कार्यक्रम की सुंदर संयोजना कर शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की है।

समणी विनीतप्रज्ञा जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी व मुनि नमि कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी ने अपने श्रद्धासिक्त भावों के द्वारा शासनमाता की अभिवंदना की।

साध्वीवृद्ध एवं समणीवृंद ने अपने समूह गान का भावपूर्ण संगान कर परिषद को भावविभोर बना दिया।

दिल्ली सभा, महिला मंडल व तेयुप सदस्यों ने सामूहिक गीत का संगान कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने की।

संसारपक्षीय भगिनी निर्मला पुगलिया के संदेश का वाचन पुखराज सेठिया ने व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन महिला मंडल अध्यक्षा मंजु जैन ने किया।

सांसद लहरसिंह सिरोहिया, प्रोफेसर रतनलाल महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, अभातेममं मंत्री मधु देरासरिया, विकास परिषद के संयोजक मांगीलाल सेठिया, कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन, जैन विश्व भारती के महामंत्री सलिल लोढ़ा, अमृतवाणी के अध्यक्ष रूपचंद दुगड़, जय तुलसी फाउंडेशन के मंत्री बजरंग सेठिया, शासनमाता के संसारपक्षीय परिवार से नरपत दुगड़, प्रतिभाधारी श्रावक धनराज बैद, दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, भगवान महावीर मेमोरियल संपतमल नाहटा, अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा ने अपने श्रद्धामय भावों के द्वारा श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया। मधुर संगायिका मीनाक्षी भुतोड़िया ने अपनी स्वर-लहरी से कार्यक्रम में समा बाँध दिया। कार्यक्रम का संचालन सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या में उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में गीतांजलि कार्यक्रम हुआ, जिसमें मधुर संगायिका मीनाक्षी भूतोड़िया ने प्रस्तुति दी। प्रातः वात्सल्य-पीठ पर मंत्रांजलि कार्यक्रम हुआ। पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त मंत्र से पूरा परिसर ऊर्जावान बन गया। मंत्रांजलि कार्यक्रम में मुनिश्री व साध्वीश्री जी का संक्षिप्त व सारगर्भित उद्बोधन हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी की प्रेरणा से मंत्रांजलि का कार्यक्रम संपादित हुआ। सैकड़ों व्यक्तियों ने एक साथ मंत्र जापकर दिव्य ऊर्जा का अनुभव किया। तेरापंथी सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में सैकड़ों परिवारों ने साध्वीश्री जी की प्रेरणा से सामुहिक जप कर शासनमाता को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया।

जीवन में उपयोगिता का महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

कोटेश्वर-मोटेरा, अहमदाबाद (गुजरात) १३ मार्च, २०२३

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि नौका में छेद होता है तो वह नौका पानी में आगे बढ़ेगी और उसमें कोई यात्री आदि बैठे होंगे तो उन्हें खतरा हो सकता है। वह सछिद्र नौका डुबाने वाली बन सकती है। निश्छिद्र नौका लोगों को पार पहुँचाने वाली हो सकती है।

कहीं-कहीं का छेद अच्छा भी हो सकता है। छेद होना या न होना, विशालता का होना या न होना ये सापेक्ष चीजें हैं। उनकी उपयोगिता है, तब तो छेद भी ठीक है, विशालता भी ठीक है। उपयोगिता है तो निश्छिद्रता भी ठीक है, संक्षिप्तता भी ठीक है। बड़ों की उपयोगिता है, तो छोटों की भी उपयोगिता हो सकती है। सापेक्षता का महत्त्व होता है।

कोई भी ऐसा हिंदी वर्णमाला का अक्षर नहीं है, जो मंत्र नहीं बन सके, कोई ऐसी जड़ी बूटी नहीं है जो दवाई न बन सकती हो। सामान्यतया हर आदमी में योग्यता होती है। योजित करने वाला आदमी कई बार मुश्किल-दुर्लभ हो सकता है। जिसकी जितनी अर्हता हो, उस तरीके से उसका उपयोग किया जा सकता है। सापेक्षता हमारे जीवन में जुड़ी हुई है।

आश्रव एक प्रकार का छेद है। आश्रव से कर्मों का बंध होता है। पाप कर्मों के बंध को रोकने का प्रयास हो। संवर की साधना हो। क्षायिक सम्यक्त्व चौथे गुणस्थान में आ सकती है। सर्वोच्च सम्यक्त्व क्षायिक सम्यक्त्व है। गुणस्थानों में चौदहवाँ गुणस्थान उत्कृष्ट है। अयोग अवस्था उसी में ही होती है। आश्रवों को रोकने की साधना हमारी चलती रहे, जब तक मोक्ष न मिले।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी प्रमिला कुमारी जी आदि साध्वियों ने अपनी खुशी की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। उत्तर गुजरात तेरापंथ सभा के मंत्री सुनील चोपड़ा ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि राग और द्वेष ही कर्म के बीज होते हैं।

मर्यादाएँ श्रावक के सुरक्षा कवच है

मानसरोवर गार्डन, दिल्ली।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मानसरोवर गार्डन के तत्त्वावधान में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने श्रावकत्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि छोटी-छोटी बातों में जागरूक रहने वाला व्यक्ति ही श्रावक होता है। मर्यादाएँ श्रावक का सुरक्षा कवच है। उन्होंने नवकारसी के अर्थ को परिभाषित करते हुए बारह व्रती श्रावक बनने की प्रेरणा दी।

मुनिश्री ने विभिन्न प्रकार के श्रावकों और साधुचर्या के बारे में सरस प्रवचन से उपस्थित जनसमूह को विशेष धर्म प्रेरणा दी। मुनि कमल कुमार जी ने उपासक बनने हेतु आह्वान किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक और ज्ञानशाला के विकास हेतु मुनिश्री की प्रेरणा से श्रावक समाज में विशेष जागृति का वातावरण बना। सभा में महासभा उपाध्यक्ष सुमन नाहटा ने श्रावकत्व की महिमा के बारे में, प्रेक्षाध्यान पत्रिका के पूर्व संपादक अशोक संचेती ने आचरण में श्रावकत्व उतरे तथा दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने श्रावक कार्यकर्ता हो इस बारे में अपने-अपने प्रासंगिक विचार प्रस्तुत किए। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित 'श्रावक व्रत धारो' गीत का संगान भी किया। स्थानीय सभाध्यक्ष विमल भंसाली, मंत्री मुकेश बोरड़ सहित अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 मार्च, 2023

✦ *अपनी योग्यता को विकसित करो। तुम आजन्म उपयोगी बने रह सकोगे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मैं सौभाग्यशाली हूँ मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का अवसर मिला : महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत

दुखों से मुक्ति हो जीवन का लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा त्रिदिवसीय 'ग्लोबल कनेक्ट' का आयोजन

प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा, गांधीनगर, ११ मार्च, २०२३

ध्यान के महान साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातः प्रेक्षाध्यान शिविर के शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। शिविर के शिविरार्थियों के अलावा भी काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी।

टीपीएफ द्वारा एक कार्यक्रम टीपीएफ 'ग्लोबल कनेक्ट' परम पावन की पावन सन्निधि में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत थे। इस कार्यक्रम का विषय था—'क्या हो लाइफ का विजन'।

ऊर्जा के ब्रह्मकमल आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि इस जीवन को अध्रुव कहा गया है। हमारा जीवन शाश्वत नहीं है। जीवन में दो तत्त्वों का योग है—आत्मा और शरीर। आत्मा और शरीर का मिला-जुला एक रूप है, वह जीवन है। कोरी आत्मा है तो जीवन नहीं होता। मोक्ष में केवल शुद्ध आत्मा है, शरीर नहीं। कोरा शरीर है, तो भी जीवन नहीं हो सकता। पार्थिव शरीर में जीवन नहीं है।

आत्मा और शरीर का वियुक्त हो जाना मृत्यु है। आत्मा का हमेशा के लिए शरीर से वियुक्त हो जाना मोक्ष है। ८४ लाख जीव योनियों में मानव एक अच्छा प्राणी होता है। श्रेष्ठ प्राणी भी मानव को कहा जा सकता है। मानव जीवन का लाइफ स्टेटमेंट क्या हो?

धर्म के संबंध में पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए जीवन धारण करना चाहिए। जीवन का विजन स्टेटमेंट होना चाहिए दुःख मुक्ति। सभी प्राणी दुःख से मुक्त रहना चाहते हैं। प्राणी को दुःख का भय लगता है।

दुःख मुक्ति भी दो तरह की होती है—एक तात्कालिक भौतिक सुविधा को पाना। दूसरी आध्यात्मिक साधना से शाश्वत दुःख मुक्ति को पाना। सामान्य आदमी के लिए तात्कालिक मुक्ति अनिवार्य होती है।

आज हमारे बीच राज्यपाल महोदय पधारे हैं। हम गुजरात प्रांत की यात्रा कर रहे हैं। जीवन में चार प्रकार का विकास अपेक्षित है—भौतिक विकास, आर्थिक विकास—ये दो विकास महत्त्वपूर्ण और राष्ट्र के लिए आवश्यक भी हैं। तीसरा है—जनता में नैतिकता का विकास और चौथी बात है—आध्यात्मिकता का विकास। नैतिकता के बिना बाह्य विकास में भी बाधा आ सकती है। नैतिकता का विकास चेतना के लिए भी आवश्यक है। आध्यात्मिक विकास से आत्मा राग-द्वेष मुक्त हो जाए। जीवन अच्छा रहे तो कुछ दुःख मुक्ति हो सकेगी। हम सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का संदेश देकर जनता में जागृति लाने का प्रयास कर रहे हैं। अणुव्रत आंदोलन से भी लोगों का जीवन बदला है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि क्या खोना है और क्या पाना है, उसका नाम है—विजन। विकास के लिए जिंदगी का विजन जरूर बनाएँ। अहिंसा परमो धर्मः विजन हो सकता है। अहिंसा-मैत्री का अनुचिंतन करें। आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा के माध्यम से अहिंसा-मैत्री का संदेश दे रहे हैं। हमें अपने जीवन को सुंदर और रंगीन बनाना है हमें तो विजन बनाना होगा।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी रमावती जी, साध्वी सोमयशा जी, साध्वी कार्तिकयशा जी, साध्वी चैतन्ययशा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

टीपीएफ के कार्यक्रम ग्लोबल कनेक्ट के प्रारंभ में अहमदाबाद टीपीएफ अध्यक्ष राकेश गुगलिया, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना, टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। राज्यपाल महोदय का प्रतीक चिह्न एवं साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया।

टीपीएफ सदस्यों ने पूज्यप्रवर से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया। आभार ज्ञापन राष्ट्रीय महामंत्री विमल शाह ने किया। टीपीएफ कार्यक्रम का संयोजन विजय कोठारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ एवं समापन दोनों समय राष्ट्रगान गाया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कमल पत्र की तरह निर्लिप्त जीवन जीएँ : महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत

महामहिम राज्यपाल महोदय ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि आज मुझे प्रथम बार आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन का अवसर मिला है। आचार्यप्रवर ने हमें जीवन का संदेश दिया है। इस संसार में जितने भी जड़-चेतन पदार्थ हैं, उन सबका कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। हमें जो शरीर मिला है, उसका भी एक उद्देश्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के विजन के लिए हैं।

हिंसा दुःख की जननी है। जीवन में अहिंसा का विकास हो। दया, करुणा की भावना हो यह गुरुदेव ने एक प्रसंग से समझाया। सब प्राणियों के प्रति मैत्री की भावना हो। विद्यार्थियों को भौतिक ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार मिलें। काम, क्रोध से आदमी पाप में जा सकता है। हमारे पाप नष्ट हों, ऐसा पुरुषार्थ करते रहें।

मानव देह को पाकर भौतिक चकाचौंध में उलझ गए तो फिर जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रहेगा। जीवन जीने के दो मार्ग हैं—प्रेय और श्रेय मार्ग। हमारे जीवन का लक्ष्य धर्म, काम और अथार्जन करते हुए भी मोक्ष है। जीवन में साधन जरूरी है। शरीर साधन है, पर हमारा साध्य मोक्ष टिकाऊ होता है।

हमारी संस्कृति अध्यात्म वाली संस्कृति रही है। बचपन आता है और चला जाता है। यौवन आता है और चला जाता है पर बुढ़ापा आता है तो वह अकेला नहीं जाता; साथ में लेकर जाता है। प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है, पर हम प्रकृति का उपयोग त्यागपूर्वक करें। कमल पत्र की तरह निर्लिप्त जीवन जीएँ। सुख-दुःख की परिभाषा है—जिस चीज में हमारी अनुकूलता है वहाँ सुख है। जहाँ पर प्रतिकूलता है वह दुःख है।

साध्वी ज्ञानप्रभाजी (सरदारशहर) का देवलोकगमन

सुजानगढ़।

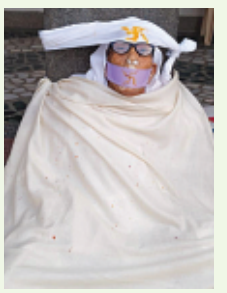

साध्वी ज्ञानप्रभा जी का जन्म सरदारशहर के सेठिया गोत्र में संवत् १९९८ माघ कृष्णा-४ को हुआ। (सा०वि० में भाद्रव महीना है) उनका मूल नाम गट्टूकुमारी था। पिता का नाम आसकरण और माता का नाम भंवरी देवी था।

वैराग्य एवं दीक्षा : वैराग्य उत्पत्ति के बाद गट्टू कुमारी ने पा०शि० संस्था में लगभग चार वर्ष रहकर शिक्षा एवं साधना का अभ्यास किया। फिर साधिक १७ वर्ष की अविवाहित वय में संवत् २०१७ आषाढ़ शुक्ला-१५ को आचार्य तुलसी द्वारा केलवा में दीक्षा ग्रहण की। उस दिन कुल १३ दीक्षाएँ हुईं।

सान्निध्य : दीक्षित होने के बाद ३३ वर्षों तक साध्वी मालूजी (चूरू) के सिंघाड़े में रही। संवत् २०५२ में उनके दिवंगत होने के बाद आचार्यप्रवर ने साध्वी सुप्रभाजी (श्रीडूंगरगढ़) का सिंघाड़ा बनाया। तब से अब तक वे उनके साथ है। दोनों सिंघाड़ों के साथ लगभग २७ वर्ष गुरुदेव की सेवा में रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग ६० वर्ष तक उन्हें एक ही सिंघाड़े में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शिक्षा : दसवैकालिक सूत्र व थोकड़े आदि कंठस्थ, कुछ आगम व ग्रंथों का वाचन किया।

कला : सिलाई, रंगाई आदि।

तपस्या : उपवास, बेला, तेला आदि। आयंबिल, एकाशन।

साधना : प्रतिदिन प्रायः ३०० गाथाओं के स्वाध्याय का क्रम, एक वर्ष में दो, तीन लाख का जप चलता है।

चाकरी बक्शीष : वि०सं० २००४ सिरियारी चातुर्मास में आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा सेवाकेंद्र की चाकरी की बक्शीष की गई।

शासनश्री संबोधन : युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के द्वारा सन् २०१७ सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव पर शासनश्री संबोधन से संबोधित किया गया।

वर्तमान में गुरुदेव के निर्देशानुसार सुजानगढ़ तेरापंथ भवन में विराजमान थे। अचानक हृदय गति रुकने के कारण दिनांक २६ फरवरी, २०२३, सायं लगभग ४:४० पर वे कालधर्म को प्राप्त हो गए।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**